सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-43, अंक-02, कुल पृष्ठ-36, कार्तिक-मार्गशीर्ष, विक्रम सम्वत् 2082, नवम्बर, 2025

सेवा भारती की उपलब्धि

अब सेवा भारती ने एक ऐसा विशाल वट वृक्ष का रूप धारण कर लिया है, जिसकी छाया में अनगिनत लोगों को सुख और समृद्धि मिल रही है। इस बार ऐसे ही दो युवाओं की सफलता की गाथा प्रस्तुत है-

सेवाधाम ने मुझे सेवा करने योग्य बनाया

–ताई तुगुंग

सहायक प्रोफेसर, शासकीय महाविद्यालय, सेप्पा ईस्ट, कामेंग, अरुणाचल प्रदेश

सेवा भारती ने दिखाई सही राह

–विवेक गुप्ता

छात्र, सेवा भारती कंप्यूटर इंस्टीट्यूट वर्तमान में बीटेक कर प्राइवेट कंपनी में कार्यरत

सेवा भारती की आम सभा संपन्न

गत 11 अक्तूबर को कात्याल मंदिर, अशोक नगर, जनक जिला, केशवपुरम विभाग में सेवा भारती (दिल्ली) की आम सभा आयोजित हुई। इसका उद्घाटन दीप प्रज्जवलन से हुआ। विशाल जी, सुशील जी, रमेश जी और शुकदेव जी ने दीप प्रज्जवलित किया। इसके साथ ही गायत्री मंत्र हुआ। सभा में 2 सत्र रखे गए। पहले सत्र में परिचय और वृत्त संकलन हुआ। पहले सभी विभागों ने और उसके बाद सारे प्रांत प्रकल्पों का वृत्त दिया गया। मध्यांतर में चाय के बाद महामंत्री सुशील जी ने प्रांत का वृत्त दिया। फिर अध्यक्ष जी का आशीर्वचन हुआ। आगे गीत हुआ और फिर प्रांत प्रचारक श्रीमान विशाल जी का मार्गदर्शन रहा। अंत में कल्याण मंत्र के साथ सभा का समापन हुआ। संख्या लगभग 300 के क़रीब थी। कार्यक्रम में दान में लिए गए धन का पूरा सदुपयोग करना, अपने कार्य का मूल्यांकन करना, कितने लोगों को फ़ायदा पहुँचा, कितनों को काम मिला, कितने नए कार्यकर्ता जुड़े, सेवितजनों से कितने अपने कार्यकर्ता बने आदि की भी विस्तृत चर्चा हुई।

उपहार के साथ दीपावली की शुभकामनाएं

नाहरगढ़ जिला, पश्चिमी विभाग में दीपावली के पावन पर्व पर शिक्षिकाओं को उपहार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही सेवा भारती के कार्यकर्ता स्थानीय गाडिया लोहार बस्ती में गए। वहां उन्होंने झुलझली गडिया परिवार एवं खैरा परिवारों को उपहार देकर दीपावली की शुभकामनाएं दीं।

राम सत्संग मंडल ने दिया सहयोग

गत 7 अक्तूबर, 2025 को राम सत्संग मंडल से सेवा भारती पूर्वी विभाग छात्रावास के लिए 11,000 रुपए का सहयोग सत्संग मंडल की कार्यकारिणी ने सेवा भारती को देना तय किया और कोष प्रमुख कनिका जी और सह कोष प्रमुख राजेश मिश्रा जी द्वारा चेक मिला। इस सहयोग की विशेषता यह है कि सत्संग मंडल सुंदरकांड के बाद में आरती में जो चढ़ावा आता है उस फंड से यह सहयोग सेवा भारती के छात्रावास को दिया गया। सेवा भारती पूर्वी विभाग राम सत्संग मंडल का हार्दिक धन्यवाद और अभिनंदन करता है।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय

सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-43, अंक-02, कुल पृष्ठ-36, नवम्बर, 2025

विषय-सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
सेवाधाम ने मुझे सेवा करने योग्य बनाया	ताई तुगुंग	6
सेवा भारती ने दिखाई सही राह	विवेक गुप्ता	8
जीने का सहारा मिला सेवा भारती से		8
डायलिसिस एवं थैलेसीमिया जांच सेवाओं का शुभारंभ		10
25 हजार पथ संचलनों में 25,45,800 स्वयंसेवकों...	प्रतिनिधि	11
सकारात्मक दृष्किोण के साथ आगे बढ़ती स्नेहा		13
साहसी कुणाल	दीप्ति अग्रवाल	14
साक्षात्कार: 'समाज और संस्कृति को जोड़ने का माध्यम है कला'		15
जनजातीय अस्मिता के अग्रज 'धरती आबा'	श्वेत कमल	17
कौशल विकास: आत्मनिर्भर भारत की दिशा में...	वीणा गर्ग	19
मातृभूमि के लिए दी प्राणों की आहुति	कमलेश त्रिपाठी	22
प्रदूषण से प्रभावित मानव जीवन	आचार्य अनमोल	23
नारियल पानी के लाभ	रितेश सिंह	24
सेवा बस्ती में दीपावली उत्सव		26
पंच परिवर्तन और अपना छठ महापर्व		27
जब बालक भामाशाह ने ... अपने कपड़े दिए	संजय जिंदल	28
ऐसे थे अपने रज्जू भैया		28
अन्य गतिविधियां		29

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

दान की महिमा

धर्म के चार चरण- सत्य, दया, तप और दान प्रसिद्ध हैं। दान अर्थात देने का भाव, अर्पण करने की निष्काम भावना। हिंदू धर्म में दान चार प्रकार के बताए गए हैं- अनुदान, औषधि दान, ज्ञान दान एवं अभयदान। आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अंगदान का भी विशेष महत्व हो गया है। दान एक ऐसा कार्य है जिसके द्वारा हम न केवल धर्म का पालन करते हैं, बल्कि समाज एवं प्राणी मात्र के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन भी करते हैं।

किंतु दान की महिमा तभी होती है जब वह निस्वार्थ भाव से किया जाता है। अगर कुछ पाने की लालसा में दान किया जाए तो वह व्यवहार बन जाता है। यहां समझने वाली बात यह है कि देना उतना जरूरी नहीं होता जितना कि देने का भाव। अगर किसी को कोई वस्तु दे रहे हैं लेकिन देने का भाव अर्थात इच्छा नहीं है तो वह दान झूठ हुआ। उसका कोई अर्थ नहीं। इसी प्रकार जब हम देते हैं और उसके पीछे यह भावना होती है जैसे पुण्य मिलेगा या फिर परमात्मा इसके प्रति उत्तर कुछ देगा तो हमारी नजर लेने पर है, देने पर नहीं, तो क्या यह एक सौदा नहीं हुआ?

दान का अर्थ है देने में आनंद, एक उदारता का भाव, प्राणी मात्र के प्रति एक प्रेम एवं दया का भाव है, किंतु जब इस भाव के पीछे कुछ पाने का स्वार्थ छिपा हो तो क्या वह दान रह जाता है?

गीता में लिखा है कि कम करो, फल की इच्छा मत करो। हमारा अधिकार केवल अपने कर्म पर है उसके फल पर नहीं। हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है यह तो संसार एवं विज्ञान का साधारण नियम है। इसलिए उन्मुक्त हृदय से श्रद्धा पूर्वक एवं सामर्थ्य अनुसार दान एक बेहतर समाज के निर्माण के साथ स्वयं हमारे भी व्यक्तित्व निर्माण में सहायक सिद्ध होता है और सृष्टि के नियमानुसार उसका फल तो कालांतर में निश्चित ही हमें प्राप्त होगा।

आज के परिपेक्ष में दान देने का महत्व इसलिए भी बढ़ गया है कि आधुनिकता एवं भौतिकता की अंधी दौड़ में हम लोग देना तो जैसे भूल ही गए हैं। हर संबंध को, हर रिश्ते को पहले प्रेम समर्पण त्याग सहनशीलता से दिल से सींचा

राजा शिवी

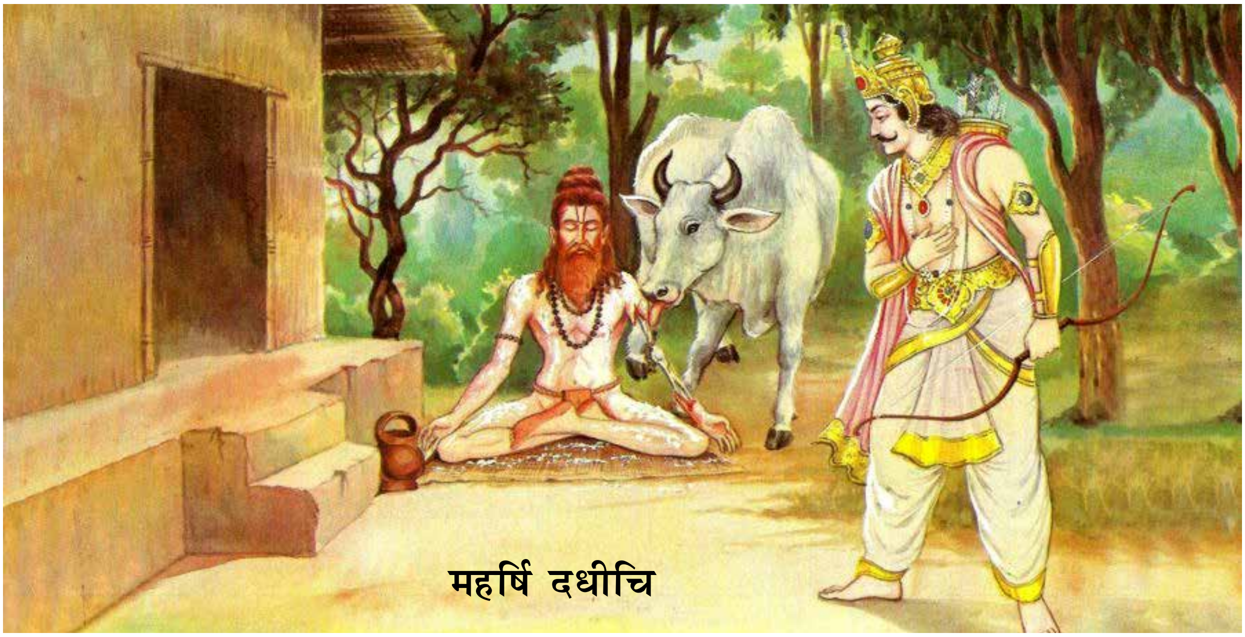

जाता था, लेकिन आज हमारे पास समय नहीं है, क्योंकि हम सब दौड़ रहे हैं और दिल भी नहीं है, क्योंकि सोने का समय जो नहीं है। हां, लेकिन हमारे पास पैसा और बुद्धि बहुत है।

इसलिए अब हम लोग हर चीज में इन्वेस्ट अर्थात निवेश करते हैं। चाहे वह रिश्ते अथवा संबंध ही क्यों ना हो तो हम लोग निस्वार्थ भाव से देना भूल गए हैं। देंगे भी तो पहले सोच लेंगे कि मिल क्या रहा है। इसलिए परिवार टूट रहे हैं, समाज टूट रहा है। जब हम अपनों को उनके अधिकार ही नहीं दे पाए तो समाज को दान कैसे दे पाएंगे।

जब हम किसी को कोई वस्तु देते हैं तो उस वस्तु पर हमारा अधिकार नहीं रह जाता। वह वस्तु पाने वाले के आधिपत्य में आ जाती है। देने की इस क्रिया से हम कुछ हद तक अपने मुंह पर विजय प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।

दान देना हमारे विचारों एवं हमारे व्यक्तित्व पर एक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालता है। इसलिए हमारी संस्कृति हमें बचपन से ही देना सिखाती है न कि लेना। हमें अपने बच्चों के हाथों से दान करवाना चाहिए ताकि उनमें यह संस्कार बचपन से ही आ जाएं। दान धन का ही हो यह कतई आवश्यक नहीं। भूखे को रोटी, बीमार को उपचार, किसी व्यथित व्यक्ति को अपना समय, उचित परामर्श, आवश्यकता अनुसार वस्त्र सहयोग, विद्या ये सभी जब हम सामने वाले की आवश्यकता को समझते हुए देते हैं और बदले में कुछ पाने की अपेक्षा नहीं करते तो यह सब दान ही है।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि परहित के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को कष्ट देने के समान कोई पाप नहीं है। दान में विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ दान होता है, क्योंकि उसे न तो कोई चुरा सकता है और न ही वह समाप्त होता है, बल्कि कालांतर में विद्या बढ़ती ही है और एक व्यक्ति को शिक्षित करने में हम उसे भविष्य में दान देने लायक ऐसा नागरिक बना देते हैं जो समाज को सहारा प्रदान करे न कि समाज पर निर्भर रहे। इसी प्रकार आज के परिपेक्ष में गोदान, रक्तदान एवं अंगदान समाज की जरूरत है। जो दान किसी जीव के प्राणों की रक्षा करे उसे उत्तम और क्या हो सकता है।

हमारे शास्त्रों में ऋषि दधीचि का वर्णन है जिन्होंने अपनी हड्डियां तक दान में दी थी।

देना तो हमें प्रकृति रोज सिखाती है। सूर्य अपनी रोशनी, फूल अपनी खुशबू, पेड़ अपने फल, नदियां अपना जल, धरती अपना सीना छलनी करके भी दोनों हाथों से हम पर अपनी फसल लुटाती है। इसके बावजूद न तो सूर्य की रोशनी कम हुई, न फूलों की खुशबू, न पेड़ों के फल कम हुए, न नदियों का जल कम हुआ। अतः दान एक हाथ से देने पर अनेक को हाथ से लौटकर हमारे ही पास वापस आता है। बस शर्त यह है कि निस्वार्थ भाव से श्रद्धापूर्वक समाज की भलाई के लिए किया जाए। ❐

सेवाधाम ने मुझे सेवा करने योग्य बनाया

■ **ताई तुगुंग,** सहायक प्रोफेसर, शासकीय महाविद्यालय, सेप्पा ईस्ट, कामेंग, अरुणाचल प्रदेश

अगर मैं सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर में नहीं पढ़ा होता तो अरुणाचल प्रदेश के किसी गांव में बेकार पड़ा रहता और परिवार के लिए सिर दर्द बनकर जीवन बर्बाद कर लिया होता। आज मैं अपने प्रदेश का एक नामचीन अभिनेता, प्रोफेसर और सफल नाटककार हूँ। मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन भी बड़ा आदमी बन पाऊँगा। मेरी कहानी एक आदिवासी बालक का अरुणाचल के जंगलों से निकलकर, भारत की राजधानी दिल्ली से पढ़कर, एक सफल जीवन की कहानी है। मैं सेवाधाम के संस्कारों से ठोक-पीटकर गढ़ा हुआ बालक हूँ।

सेवाधाम विद्या मंदिर के संस्कारों से मेरी जिन्दगी की बुनियाद बनी और मामूली आदिवासी बालक से सफल इंसान बनने की शक्ति मिली। मैं अपनी सफलताओं का श्रेय अपने गुरुजनों को अर्पित करता हूँ। इस उम्र में आकर मुझे समझ में आता है कि संघ का सेवा प्रकल्प क्या है। नि:स्वार्थ सेवा का लक्ष्य क्या है। निस्वार्थ एवं अथक सेवाओं के खप जाने का मतलब क्या है।

सन 1996 से 2003 तक मैंने छुठी कक्षा से बारहवीं की पढ़ाई सेवाधाम से पूरी की है। दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू कॉलेज से हिन्दी साहित्य में स्नातक की डिग्री पाई। उसके बाद अरुणाचल प्रदेश के राजीव गांधी विश्वविद्यालय से एम.ए की पढ़ाई पूरी की। उसके बाद मैंने कई जगह काम किया। अरुणाचल प्रदेश में सफल मंच एंकर बना, आकाशवाणी केंद्र में उद्घोषक हुए, प्रदेश का पहला हिन्दी नाटककार बना (मेरे नाटक 'लाप्या' को त्रिपुरा विश्वविद्यालय के एम.ए हिन्दी पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाता है।), अरुणाली सिनेमा का सफलतम अभिनेता बना (पूरा प्रदेश मुझे चीमा सर के नाम से जानता है), टी.वी सीरियल से होते हुए बॉलिवुड फिल्म 'भेड़िया' में वरुण धवन और कृति सेनन के साथ काम करने का मौका मिला। वर्तमान में राजकीय महाविद्यालय, सेप्पा, जिला ईस्ट कामेंग, अरुणाचल प्रदेश में हिन्दी विभाग में सहायक प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हूँ।

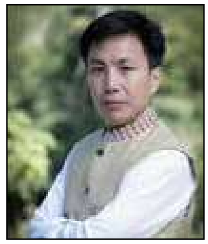

मैं अरुणाचल प्रदेश की न्यीशी आदिवासी समाज से आता हूँ। मेरे गाँव का नाम पील है। राजधानी ईटानगर से बहुत दूर है। शिक्षा का अभाव ऐसा कि जहाँ विद्यालय ही नहीं था। पढ़ाई के लिए तराइयों से उतर करदूर के गाँवों में जाना पड़ता था। पिताजी श्री ताई चारू कृषि विभाग में मामूली बाबू थे। मेरी दो माँ हैं- श्रीमती ताई पोसी और ताई यदुम। दोनों माताओं से हम छह भाई और दो बहन हैं। सबसे बड़ा मैं हूं। माँ खेती किया करती थीं, उससे बस गुजर-बसर हो जाता था मगर हमारी पढ़ाई-लिखाई के खर्चे उठाना माँ-बाबू जी के बस की बात नहीं थी। ऊपर से हमारे ताऊ जी की किसी ने हत्या कर दी थी। परिवार का मान रखने के लिए मेरे पिता जी ने हत्यारे के बड़े भाई को मारकर बदला ले लिया था। 'रिवेंज किलिंग' हमारे समाज में आज भी चलता है। उन दिनों यह प्रथा चरम पर थी। हमारा परिवार बिखर गया। पिता जी जंगल में छुप गए और हम बच्चों को अलग-अलग स्थानों पर छुपा दिया गया। हमने जंगलों में छुपकर बचपन गुजारा है। तब मेरी उम्र दस या ग्यारह साल की रही होगी, भाई-बहनें तो बहुत छोटे-छोटे थे।

दूसरी चुनौती अनुशासन की थी। सुबह जल्दी उठना, शाखा जाना, सूर्यनमस्कार, योग करना, साफ-सफाई फिर क्लास के लिए निकल जाना। खेलकूदकर शाम की प्रार्थना फिर पढ़ने के लिए बैठ जाना। लगा कि यह कोई जेल है। भाग ही जाने को मन करता लेकिन इतनी दूर आ गए थे कि माँ को याद करके रो ही सकते थे।

एक दिन मेरे चाचाश्री ताई तागक जी से ख़बर आई कि मुझे दिल्ली पढ़ने भेजना है। उन दिनों वे अरुणाचल प्रांत, सेवा भारती के सचिव हुआ करते थे। प्रवेश परीक्षा औपचारिकता के बाद पक्का हुआ कि मुझे दिल्ली जाना है। पिता जी किसी तरह जंगल से छुप-छुपाकर बस स्टैंड पहुँचे थे। उनकी आँखें नम थीं। माँ खुश थीं, उनको लगा कि दिल्ली में रहा तो कम से कम बेटा जिन्दा रहेगा। 'रिवेंज किलिंग' से कोई

तो संतान बच जाएगी। गुवाहाटी होते हुए हम दिल्ली पहुँचे। ट्रेन में शिंडे जी और एक अंजली दीदी हमे साथ लेकर आए थे। फिर सेवा धाम का विशाल सभागार में हम आए थे। अरुणाचल समेत पूर्वोत्तर से पचास-साठ बच्चे थे।

जंगल की आदत आसानी से जाएगी कहाँ, बगल में गिलहरी घूमती नजर आई। हम बच्चों ने घेर लिया, देखते ही देखते तीन चार गिलहरी मार दी। बहुत सारे कबूतर भी मार दिए, हमें लगा कि हमने बहुत बड़ा शिकार कर लिया है। अपने गांव में शिकार मार लाना बहुत सम्मान की बात हुआ करती थी। पता लगा, सेवाधाम में यह घोर अपराध है। हम सबको सजा मिली, बहुत डांट पड़ी और किसी-किसी को मार भी पड़ी। यह हमारे लिए अलग ही दुनिया थी। इतना ही नहीं, शाकाहरी भोजन करना हमारे लिए अनोखी बात थी। बिना मांस के हम खाना खाते ही नहीं थे। पूर्वोत्तर के सारे बच्चों को बुलाया गया कि जंगली हरकतें छोड़ दें। प्रधानाचार्य ओम प्रकाश जी गुस्से में तमतमा कर बोल पड़े, 'कोई मांस मछली नहीं मिलेगी! तामसिक भोजन शरीर के लिए ठीक नहीं होता है, समझे!!' इतनी कठिन हिन्दी किसी की समझ में नहीं आई, पर इतना पता चल गया कि मांस का सेवन यहाँ मना है। शुरू-शुरू में खानपान के संतुलन को बिठाना कठिन था।

सेवाधाम में पूरे भारत के गरीब और वंचित बच्चे आते हैं, शिक्षा, संस्कार, अनुशासन ग्रहण कर सफल होते हैं। हर प्रांत में मेरे दोस्त हैं, खून के रिश्ते से भी गाढ़ा रिश्ता जिनके साथ हम बड़े हुए हैं, ऐसे भाई पूरे भारत में हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कितना आगे सोचता है, उसे मामूली मन कल्पना भी नहीं कर सकता।

फिर दूसरी चुनौती अनुशासन की थी। सुबह जल्दी उठना, शाखा जाना, सूर्यनमस्कार, योग करना, साफ-सफाई फिर क्लास के लिए निकल जाना। खेलकूदकर शाम की प्रार्थना फिर पढ़ने के लिए बैठ जाना। लगा कि यह कोई जेल है। भाग ही जाने को मन करता लेकिन इतनी दूर आ गए थे कि माँ को याद करके रो ही सकते थे।

तीसरी चुनौती भाषा की थी। हिन्दी अरुणाचल में शिक्षा का माध्यम नहीं थी। हम बोल समझ तो सकते थे लेकिन लिखना बहुत मुश्किल काम था। शिक्षक की बात समझ तो जाते लेकिन लिखने में बहुत कठिनाई होती थी। धीरे-धीरे हम अनुशासन में ढल गए। दसवीं कक्षा तक पढ़ाई-लिखाई में मुझे बहुत तकलीफ हुई। लेकिन जब विवेक में यह बात आई कि घर की जिम्मेदारी मुझ पर है। मैंने दबाकर मेहनत करनी शुरू की, कक्षा के सबसे आखरी बेंच में सिकुड़कर बैठने वाला बालक, ग्यारवीं की परीक्षा टॉप कर गया। बारहवीं कक्षा में भी अव्वल रहा और राजनीति विज्ञान विषय में 97अंक लाकर विद्यालय का नाम रोशन कर दिया था। फिर दिल्ली विश्वविद्यालय के जाने-माने महाविद्यालय हिन्दू कॉलेज में दाखिला मिलना कोई फिल्म की कहानी जैसी थी।

उम्र के इस पड़ाव में आकर मुझे समझ में आता है कि सेवा भारती का लक्ष्य क्या है। निस्वार्थ भाव से सतत सेवा, यह एक दो रोज का काम नहीं है, खुद को खपाकर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करना होता है। 'चलो जलायें दीप वहाँ जहाँ अभी भी अंधेरा है' का मतलब अभी समझ में आती है। नहीं तो हम जैसे आदिवासी बालकों क्या ही भविष्य था। सेवाधाम नहीं आते तो अपने गांव में खेती-बाड़ी और शिकार ही खेल रहे होते। इसलिए मैंने तय किया है कि अपने प्रदेश में सेवा भारती की विरासत को आगे लेकर जाऊँगा। इस वर्ष मुझे सेवा भारती अरूणांचल प्रांत सचिव का दायित्व सौंपा गया है। मैंने सहर्ष स्वीकार किया और आगे सेवा कार्यों को आनंद के साथ बढ़ाने का प्रयास करूँगा।

गरीबों-वंचितों की जिन्दगी भी मायने रखती है। यह मैंने सेवा भारती से जाना है। मैंने उस प्रयास को देखा, सुना और जिया हूँ। उसके लिए किसी को अपनी पूरी जिन्दगी खपानी होती है, निस्वार्थ भाव से सेवा करनी होती है, तब जाकर फल आता है। भारत देश में समरसता के भाव को पैदा करते हुए देख रहा हूँ। सेवाधाम में पूरे भारत के गरीब और वंचित बच्चे आते हैं, शिक्षा, संस्कार, अनुशासन ग्रहण कर सफल होते हैं। हर प्रांत में मेरे दोस्त हैं, खून के रिश्ते से भी गाढ़ा रिश्ता जिनके साथ हम बड़े हुए हैं, ऐसे भाई पूरे भारत में हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ कितना आगे सोचता है, उसे मामूली मन कल्पना भी नहीं कर सकता। भारत माता की जय! ❐

सौजन्य से, रीना सचदेवा *(जिला मंत्री शहादरा)*

सेवा भारती ने दिखाई सही राह

■ विवेक गुप्ता

पहले मैं विनोद नगर में किराए के घर पर रहता था। वर्तमान में गाजियाबाद में अपना निवास है। मैं बीटेक कर प्राइवेट कंपनी में जॉब करता हूं। मेरे जीवन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक रही है सेवा भारती कंप्यूटर इंस्टीट्यूट से जुड़ना। जब मैंने इस संस्थान में दाखिला लिया था, उस समय मुझे कंप्यूटर के बारे में बहुत कम जानकारी थी। मैं उत्सुक तो था, लेकिन यह नहीं जानता था कि यह कौशल मेरे भविष्य को किस तरह बदल देगा।

सेवा भारती में मुझे केवल शिक्षक ही नहीं, बल्कि सच्चे मार्गदर्शक मिले, जिन्होंने धैर्य और समर्पण के साथ मेरा मार्गदर्शन किया। यहाँ मुझे कंप्यूटर की बुनियादी जानकारी, सॉफ्टवेयर एप्लिकेशन्स और व्यावहारिक प्रशिक्षण मिला। नियमित अभ्यास और सहयोगी वातावरण ने मेरा आत्मविश्वास धीरे-धीरे मज़बूत किया।

यहाँ सीखी गई जानकारी मेरे करियर की नींव बनी। चाहे वह प्रोफेशनल डॉक्यूमेंट तैयार करना हो, डाटा संभालना हो, इंटरनेट का सही उपयोग करना हो या बाद में एडवांस सॉफ्टवेयर सीखना हो- सेवा भारती में सीखे गए कौशल ने हर जगह मेरा साथ दिया।

आज मैं गर्व से कह सकता हूँ कि सेवा भारती से प्राप्त शिक्षा ने मुझे अपने करियर में आगे बढ़ने और अपने कई लक्ष्य पूरे करने में मदद की है। यह केवल कंप्यूटर सीखने का अनुभव नहीं था, बल्कि आत्मविश्वास, अनुशासन और कार्य के प्रति समर्पण का पाठ भी था।

मैं दिल से सेवा भारती कंप्यूटर इंस्टीट्यूट का आभारी हूँ, जिसने मुझे वह कौशल दिया जो आज भी मेरे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में मेरी ताक़त बने हुए हैं। ❐

जीने का सहारा मिला सेवा भारती से

मेरा नाम वर्षा है। मैं अपने परिवार के साथ दिल्ली के आनंद नगर, गौरव नगर बस्ती में रहती थी। वहां पर एक दिन सेवा भारती की शिक्षिका ज्योति दीदी सर्वे करती हुई आई तथा उन्होंने मुझे सौंदर्य संवर्धन का कोर्स करने के लिए प्रोत्साहित किया। ज्योति दीदी की बात मानकर मैंने सेवा भारती केंद्र में जाना शुरू कर दिया। दीदी ने हमें विस्तार से सब कुछ समझाया तथा वह बड़ी बहन की तरह हमारा ध्यान रखती थी। कोर्स पूरा होने के बाद मैंने अपने घर के समीप ही एक ब्यूटी पार्लर खोला जो दो-तीन महीना में अच्छे से चलने लगा तथा मेरी 10, 000 से 15,000 रुपए तक की आय हो जाती थी। इससे मैं स्वयं तो आत्मनिर्भर हुई ही तथा परिवार को भी सहयोग करने लगी। अभी दो माह पहले हमारा परिवार आनंद नगर गौरव नगर से नोएडा में शिफ्ट हो गया है और मैं यहां भी मैंने अपना ब्यूटी पार्लर खोला है, जिससे मुझे 15, 000 से 20, 000 की मासिक आय हो जाती है। मैं सेवा भारती की सदैव आभारी रहूंगी। ❐

डायलिसिस एवं थैलेसीमिया जांच सेवाओं का शुभारंभ

श्रीफल तोड़कर डायलिसिस एवं थैलेसीमिया जांच सेवाओं का शुभारंभ करते डॉ. कृष्ण गोपाल। साथ में हैं श्रीमती रेखा गुप्ता, श्री रमेश अग्रवाल आदि

गत 7 अक्तूबर को भगवान वाल्मीकि प्रकटोत्सव के पावन अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल और दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने सेवा भारती डायग्नोस्टिक एवं डायलिसिस सेंटर, अशोक विहार में समाज के वंचित एवं जरूरतमंद वर्गों के लिए निःशुल्क डायलिसिस सेवाएं और थैलेसीमिया जांच सुविधाओं का शुभारंभ किया। इस अवसर पर डॉ. कृष्ण गोपाल ने कहा कि सामर्थ्यवान लोगों को मिलकर समाज के उपेक्षित वर्ग के स्वास्थ्य और सामाजिक उत्थान की चिंता करनी होगी। भारत के लोगों में करुणा भाव बहुत प्रबल है, सेवा का अवसर परमात्मा के द्वारा दिया जाता है। उन्होंने कहा कि अगर सभी खड़े हो जाएं तो दो-तीन साल में दिल्ली के अस्वस्थ समाज को स्वस्थ बनाया जा सकता है। हमें अगले पांच वर्ष में दिल्ली को एनीमिया मुक्त बनाना है। सह-सरकार्यवाह जी ने आह्वान किया कि सभी सामर्थ्यवान लोगों को अपने आसपास के वंचित लोगों के स्वास्थ्य और सामाजिक विकास की चिंता करनी चाहिए। देश को मन से स्वस्थ बनाने का दायित्व हम सभी का है।

सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता ने कहा कि भारत और दिल्ली को विकसित और स्वस्थ बनाने के लिए सिर्फ सरकार नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों को साथ मिलकर आगे बढ़ना होगा। मुख्यमंत्री ने स्वीकार किया कि अभी स्वास्थ्य के क्षेत्र में बहुत काम करना बाकी है। सेवा भारती के प्रयासों की सराहना करते हुए सभी को इनसे जुड़ने का आह्वान किया। कार्यक्रम में दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सेवा भारती के महामंत्री श्री

कार्यक्रम के मंच पर श्री रमेश अग्रवाल, श्रीमती रेखा गुप्ता डॉ. कृष्ण गोपाल आदि

स्व. वी.के. वढेरा जी की प्रतिमा का अनावरण करने के बाद कार्यकर्ताओं के साथ श्रीमती रेखा गुप्ता

सुशील गुप्ता ने सेवा भारती के कार्यों का परिचय दिया। सेवा भारती डायग्नोस्टिक एवं डायलिसिस सेंटर के अध्यक्ष श्री अशोक गर्ग ने बताया कि इस पहल का उद्देश्य समाज के उन वर्गों को सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करना है, जो अक्सर आर्थिक कारणों से उपचार से वंचित रह जाते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इस केंद्र के माध्यम से नियमित रूप से जरूरतमंद मरीजों को नि:शुल्क डायलिसिस और थैलेसीमिया जांच उपलब्ध कराई जाएगी।

कार्यक्रम के दौरान समाज के प्रेरणास्रोत स्व. वी.के. वढेरा जी की प्रतिमा का अनावरण मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता जी द्वारा किया गया और उनके जीवन को प्रेरणादायी बताते हुए उनके द्वारा किए गए भूमिदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसी क्रम में समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली सेवा विभूतियों को मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित किया गया। सेवा भारती दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल ने सभी आगंतुकों, अतिथियों और सहयोगी संस्थाओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा, "सेवा ही संगठन का मूल है, और सेवा भारती का हर कार्य इसी भावना को समर्पित है।" कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरुण बंसल, चेयरमैन, बंसल वायर ने की।

''सामर्थ्यवान लोगों को मिलकर समाज के उपेक्षित वर्ग के स्वास्थ्य और सामाजिक उत्थान की चिंता करनी होगी। भारत के लोगों में करुणा भाव बहुत प्रबल है, सेवा का अवसर परमात्मा के द्वारा दिया जाता है।''

– डॉ. कृष्ण गोपाल

सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

''भारत और दिल्ली को विकसित और स्वस्थ बनाने के लिए सिर्फ सरकार नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों को साथ मिलकर आगे बढ़ना होगा। अभी स्वास्थ्य के क्षेत्र में बहुत काम करना बाकी है।''

– रेखा गुप्ता

मुख्यमंत्री, दिल्ली

''सेवा ही संगठन का मूल है, और सेवा भारती का हर कार्य इसी भावना को समर्पित है।''

– रमेश गुप्ता

अध्यक्ष, सेवा भारती

25 हजार पथ संचलनों में 25,45,800 स्वयंसेवकों की सहभागिता

■ **प्रतिनिधि**

गत 30 अक्तूबर से 1 नवंबर तक जबलपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल बैठक आयोजित हुई। 1 नवंबर को पत्रकार वार्ता में सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबाले जी ने कार्यकारी मंडल बैठक तथा संघ शताब्दी वर्ष के निमित्त श्री विजयादशमी के उपलक्ष्य में देशभर में आयोजित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्रदान की।

उन्होंने कहा कि विजयादशमी के मंगल अवसर पर नागपुर सहित देशभर में कार्यक्रम संपन्न हुए। शताब्दी वर्ष के निमित्त धार्मिक, साहित्य, कला, उद्योग, व अन्य क्षेत्रों के गणमान्य लोगों ने अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की हैं। संघ के 100 वर्ष की यात्रा में लाखों स्वयंसेवकों के साथ ही समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों ने सहयोग दिया, उन सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

उन्होंने बताया कि विजयादशमी के अवसर पर देशभर में आयोजित कार्यक्रमों के आंकड़े संघ कार्य के विस्तार को दर्शाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में 59,343 मंडलों में से 37,250 मंडलों में कार्यक्रम हुए, जिसमें आस-पास के मंडलों के स्वयंसेवक भी शामिल हुए। इस प्रकार 50,096 मंडलों का प्रतिनिधित्व रहा। नगरीय क्षेत्रों में 44,686 बस्तियों में से 40,220 बस्तियों का प्रतिनिधित्व कार्यक्रमों में रहा। इसके अतिरिक्त 6700 विजयादशमी कार्यक्रम हुए। इस प्रकार कुल मिलाकर 62,555 विजयादशमी उत्सव हुए। विशेष यह कि 80 प्रतिशत कार्यक्रम विजयादशमी के दिन ही हुए, कुछ स्थानों पर स्थानीय कारणों के चलते बाद में या पहले कार्यक्रम हुए।

देशभर में आयोजित इन कार्यक्रमों में 32,45,141 स्वयंसेवक गणवेश में उपस्थित रहे। पथ संचलन के कार्यक्रम सभी जगह नहीं हुए, कुछ स्थानों पर हुए। देश में 25,000 स्थानों पर पथ संचलन हुए, इनमें 25,45,800 स्वयंसेवक गणवेश में सहभागी हुए। देश का कोई भी भौगोलिक क्षेत्र अछूता नहीं रहा, इन कार्यक्रमों से यह फैलाव दिखता है। अंडमान में भी कार्यक्रम हुआ, लद्दाख, अरुणाचल, मेघालय व नागालैंड में भी हुआ है।

उन्होंने बताया कि विजयादशमी के कार्यक्रमों में समाज के विभिन्न समुदाय, समूह की सहभागिता रही। नागपुर के कार्यक्रम में विदेश से भी अतिथियों की उपस्थिति रही। उन्होंने सरसंघचालक जी व अन्य अधिकारियों से नागपुर और दिल्ली में भेंट की। उन्होंने संघ को समझा भी और शुभकामनाएं भी दीं। पिछले वर्ष अक्तूबर में हुई बैठक के बाद से संघ कार्य की दृष्टि से एक साल में 10 हजार नए स्थानों पर संघ कार्य प्रारंभ हुआ है। वर्तमान में 55052 स्थानों पर 87398 शाखाएं लग रही हैं जो पिछले वर्ष से 15000 अधिक हैं। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक मिलन 32362 हैं। यह दोनों को मिलाकर कुल स्थान 87414 होती है। पिछले कुछ वर्षों में विशेष प्रयासों के कारण जनजाति क्षेत्र के साथ-साथ श्रमजीवी, कृषक, विद्यार्थी, व्यवसायी, अन्य क्षेत्रों में भी कार्य का विस्तार हुआ है।

बैठक की जानकारी देते श्री दत्तात्रेय होसबाले

शताब्दी वर्ष के आगामी कार्यक्रम

बैठक में शताब्दी वर्ष के आगामी कार्यक्रमों को लेकर भी चर्चा हुई। अभी तक समाज का अच्छा प्रतिसाद मिला है। संघ का कार्य समाज, राष्ट्र का कार्य है। आगे बस्ती/मंडल स्तर पर हिन्दू सम्मेलन करने वाले हैं। हिन्दू सम्मेलनों के माध्यम से मंडल, बस्ती स्तर तक पंच परिवर्तन से विषयों को लेकर पहुंचेंगे, प्रयास रहेगा कि समाज के आचरण का विषय बने। इनमें साधु संत, सज्जन शक्ति, मातृ शक्ति, प्रमुख लोग विचार रखेंगे। अनुमान है कि 45000 ग्रामीण और 35000 नगरीय स्थानों पर सम्मेलन आयोजित होंगे। खंड, नगर स्तर पर सामाजिक सद्भाव बैठकों का आयोजन होगा, जिला स्तर पर प्रमुख जन नागरिक गोष्ठियों का आयोजन होगा।

अधिकाधिक लोगों को राष्ट्र कार्य में जोड़ना है। सभी लोग शाखा में आ जाएं, ऐसी अपेक्षा नहीं है। पर, अपने-अपने क्षेत्र में समाज की एकता, समाज की समरसता, राष्ट्र की उन्नति के भाव से कार्य करें। शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों का उद्देश्य संगठन की शक्ति बढ़ाना नहीं, समाज की आत्मशक्ति को बढ़ाना है।

सरकार्यवाह जी ने बताया कि कार्यकारी मंडल में तीन वक्तव्य जारी किए गए हैं। 24 नवंबर को सिख पंथ के नवम गुरु श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत को 350 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। यहां बैठक में गौरव समर्पण किया है। आगामी समय में देशभर में होने वाले कार्यक्रमों में कार्यकर्ता भाग भी लेंगे, और कई जगह आयोजन में भी सहभागी होंगे। गुरु तेगबहादुर जी ने धर्म, संस्कृति और समाज की एकता की रक्षा के लिए प्राण अर्पण किया। वह अपने समाज, धर्म, संस्कृति के रक्षा के लिए कटिबद्ध रहे, यह आज पीढ़ी को बताना है।

भगवान बिरसा मुंडा जनजाति क्षेत्र के जननायक, जिन्होंने भारत भूमि के लिए कार्य किया वह सभी के लिए आदर योग्य हैं। बिरसा मुंडा केवल अंग्रेजों के खिलाफ लड़े, ऐसा नहीं है। उन्होंने धर्मांतरण के खिलाफ, जनजातीय क्षेत्र के विकास के लिए भी विचार रखा। उनके प्रति हम श्रद्धा अर्पित करते हैं। और उनकी 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में सारे समाज को सहभागी होना चाहिए। संघ ने बिरसा मुंडा को प्रातः स्मरणीय माना है।

वंदे मातरम राष्ट्रगीत के 150 वर्ष हो रहे हैं। 1975 में राष्ट्रगीत के 100 वर्ष पूर्ण होने पर देशभर में समितियां बनाई थीं। लेकिन दुर्भाग्य से आपातकाल लगने के कारण इस कार्य को स्थगित करना पड़ा। स्वतंत्रता संग्राम में जिसे गीत के रूप में गाया था, 1975 में फिर से स्वतंत्रता संग्राम करने के दिए आ गए थे। वर्तमान पीढ़ी को इसकी रोचक कहानी बतानी चाहिए, वंदे मातरम केवल गीत नहीं है, भारत की आत्मा का मंत्र है। भारत की पहचान व संस्कृति को समझना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि झारखंड और छत्तीसगढ़ में नक्सली गतिविधियों में परिवर्तन दिख रहा है। नक्सली शस्त्रों को त्याग कर समाज की मुख्यधारा में आ रहे हैं। उन्होंने मणिपुर के विषय पर कहा कि यद्यपि वहां की सरकार अभी कार्य में नहीं है, किंतु जल्दी ही वहां अच्छे दिन आएंगे। संघ कार्यकर्ताओं ने पिछले दो वर्षों में संकट की परिस्थिति में धरातल पर कार्य किया। वहां पर परस्पर विश्वास का निर्माण करने की दृष्टि से कई बातें हुई हैं।

बैठक में भारत के युवाओं के प्रति चिंता व्यक्त की गई। आज का युवा एक ओर भारत के विकास में तकनीकी और अपने कौशल के साथ आगे बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर नशे के कारण वह पिछड़ रहा है। हमारे शैक्षिक संस्थानों स्कूलों, महाविद्यालयों जैसे क्षेत्रों में ड्रग्स का विक्रय हो रहा है, जिसे रोकने के लिए सरकार के साथ-साथ समाज, धार्मिक संस्थाओं, समाज के कार्यकर्ताओं आदि को सक्रिय होना पड़ेगा। इसमें कुटुंब प्रबोधन की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है।

पिछले वर्ष अक्तूबर में हुई बैठक के बाद से संघ कार्य की दृष्टि से एक साल में 10 हजार नए स्थानों पर संघ कार्य प्रारंभ हुआ है। वर्तमान में 55052 स्थानों पर 87398 शाखाएं लग रही हैं जो पिछले वर्ष से 15000 अधिक हैं। इसके अतिरिक्त साप्ताहिक मिलन 32362 हैं। यह दोनों को मिलाकर कुल स्थान 87414 होती है। पिछले कुछ वर्षों में विशेष प्रयासों के कारण जनजाति क्षेत्र के साथ-साथ श्रमजीवी, कृषक, विद्यार्थी, व्यवसायी, अन्य क्षेत्रों में भी कार्य का विस्तार हुआ है।

सकारात्मक दृष्किोण के साथ आगे बढ़ती स्नेहा

स्नेहा गाड़िया लोहार समाज से आती है। स्नेहा की सोचने, समझने तथा विषयों को गंभीरता से लेने की आदत तथा केवल वहां बोलना जहां आवश्यक हो, उसका यह स्वभाव उसके व्यक्तित्व को और निखार देता है। हालांकि स्नेहा के बहुत सारे सपने हैं, बहुत आगे तक जाने की उसकी सोच है। और स्नेहा ही वह लड़की है जिसके कारण पश्चिमी तथा केशवराम विभाग में गाड़िया लोहार समाज के मध्य आधारभूत दस्तावेज बनाने का काम सफल हो पाया था।

परन्तु जब शिक्षा की बात की जाए तो उसने केवल 8वीं कक्षा उत्तीर्ण की थी और नवमी में आते ही स्कूल छोड़ दिया था। कारण था डर, जैसा कि दिल्ली की शिक्षा नीति है कि आठवीं कक्षा तक किसी बच्चे को फेल नहीं करना और फिर नवीं कक्षा में इतने सारे बच्चे रुक जाते हैं, इसी डर ने स्नेहा के मन में घर कर लिया था। इसी कारण से उसने नवमी कक्षा की परीक्षा से पहले ही विद्यालय छोड़ दिया था।

परन्तु आगे भी पढ़ना था और अपने जीवन में कुछ अलग करना है यह भी चलता रहता था।

2018 में स्नेहा, शैलेन्द्र जी (सेवा भारती प्रांत मंत्री) के प्रयास से दक्ष भारती से जुड़ी जिसमें वह कंप्यूटर की शिक्षा ले रही थी। उस समय शैलेन्द्र जी दक्ष भारती देख रहे थे। और इसी माध्यम से स्नेहा और शैलेन्द्र जी का निरंतर संवाद होता रहा और धीरे-धीरे स्नेहा का मन अपनी पढ़ाई दोबारा शुरू करने का बना और 10वीं की पढ़ाई एन.आई.ओ.एस. से पुनः शुरू कर दी। क्योंकि स्नेहा का पढ़ने का अभ्यास छूट गया था और शायद कहीं तैयारी में कमी रह गई जिसके कारण उसकी सामाजिक विज्ञान के विषय में बैक आ गई। परन्तु स्नेहा का मनोबल बना रहा और उसने दोबारा इस विषय को उत्तीर्ण करने के लिए पढ़ना शुरू किया। और इस बार सेवा भारती की ही एक दीदी से वह यह विषय पढ़ रही थी, ताकि इस बार कहीं कमी न रह जाए। परन्तु दोबारा वही हुआ और उसकी इस विषय में दोबारा बैक आ गई। पर इस बार उसे यह आत्मविश्वास था कि उसकी बैक नहीं आ सकती तो उसने आंसर कॉपी चेक करने को लेकर एन.आई.ओ.एस. में बात की परंतु उन्होंने यह दिखाने से मना कर दिया। इस बात से स्नेहा का मन टूट गया, क्योंकि उसे लगने लगा कि एन.आई.ओ.एस. उसे पास नहीं कर रहा क्योंकि उसकी तैयारी और पेपर बहुत अच्छे से हुआ था। और उसने दोबारा परीक्षा देने से मना कर दिया। बहुत कोशिश करने के बाद वह अंतिम बार परीक्षा देने को तैयार हुई। और पढ़ाई भी अच्छे से की और पूरे विश्वास के साथ पेपर लिखा। और इस बार उसने दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली। यह बात सुनके शैलेंद्र जी तथा घुमंतू समाज की पूरी टीम को बहुत खुशी हुई। इसी चलन में आगे पढ़ाई को जारी रखते हुए इस वर्ष स्नेहा ने 12वीं की कक्षा भी उत्तीर्ण कर ली और अब स्नातक की शिक्षा ग्रहण कर रही है। इतने समय से सेवा भारती के साथ संपर्क में रहते हुए स्नेहा को पता है कि उसे किस दिशा में आगे बढ़ना है। ❒

द्वारा कौशल

साहसी कुणाल

■ दीप्ति अग्रवाल

हम सब अपने छोटे-छोटे कष्टों को देखकर परेशान हो जाते हैं। परंतु कुणाल पर तो जैसे संकट का पहाड़ ही टूट पड़ा। परंतु इस नौजवान ने हार नहीं मानी और हर मुश्किल को पार करता हुआ आगे बढ़ता रहा। और ऐसा विजयी हुआ, जो कि समाज के लिए एक मिसाल है। आज मुझे ये शब्द सार्थक होते दिखते हैं कि 'कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।'

मैंने कुणाल को सड़क पर चलते, दौड़ते देखा था। उसको मैं देखती ही रह गई। क्यूँ कि वह हम जैसा आम इंसान नहीं दिखा। वह मेरे घर के पास ही रहता था, तो वह अक्सर ही मुझसे टकरा जाता। किन्तु वो न तो मुझे बेचारा लगा और न ही उसमें किसी तरह की परेशानी सहने वाला लाचार व्यक्ति दिखा।

एक दिन मन में आया कि कुणाल के बारे में सबको पता होना चाहिए। मैं उसके पास गई और हिचकते हुए उससे बात करनी शुरू की। मैंने उनसे पूछा कि ऐसा कैसे और कब हुआ। तो उन्होंने बताया कि उनका 25 सितंबर, 2021 को मोटर साइकिल से एक सड़क दुर्घटना हुई व बुलेट मोटरसाइकिल उनके पैर पर गिर पड़ी थी। जिससे बहुत खून का रिसाव हो चुका था। पैर की सभी हड्डी, व मांसपेशियां चकनाचूर हो चुकी थीं। मनुष्य के शरीर में आठ बोतल खून होता है और लगभग पाँच बोतल खून बह चुका था। बहुत संक्रमण भी फैल चुका था। डॉक्टरों ने कुछ संकेत तो दे दिए थे, कि शायद उनका पैर काटना पड़ेगा। फिर भी थोड़ा इंतज़ार कर लेते हैं। परंतु बात वही हुई और उनका पैर काटना पड़ा। नवंबर 2 को कुणाल का पैर काटा गया। दो महीने लगे ज़ख़्म भरने में। काफ़ी तक़लीफ़ हुई, घर दूसरी मंज़िल पर होने की वजह से ऊपर चढ़ना उतरना संभव नहीं था। इसलिए उस समय भूतल पर ही किराया का घर लेना पड़ा। परंतु बाक़ी परिवार ऊपर ही रहा। माता, पिता जी से पूछने पर पता चला कि उनको भी यह सहन करना बहुत भारी हो रहा था, की जवान बेटे के साथ ऐसा हो रहा है। वह ऊपर घर में तो रो रोकर दिन काटते, परंतु कुणाल के सामने सभी आम ढंग से बात करते। सभी दोस्त व रिश्तेदार कुणाल से बिल्कुल ही आम ढंग से मिलते, जैसे कुछ हुआ ही नहीं। किसी ने भी अपने आँसू कुणाल के सामने व्यक्त नहीं होने दिए। सभी ने कुणाल को अंदर से टूटने नहीं दिया। इस बात का कुणाल को बहुत समय बाद पता चला। परन्तु कुणाल के मन में पहले ही दिन से था कि मुझे बिस्तर पर नहीं रहना, मुझे सारी ज़िंदगी ऐसे नहीं बितानी। धीरे-धीरे उनका पैर ठीक होने की तरफ़ था। डॉक्टरों ने उसे नक़ली टाँग का प्रयोग करने की सलाह दी। कुणाल ने एक ऐसे वॉट्सएप ग्रुप को भी ज्वाइन किया, जिसमें उसे ऐसे सभी लोगों का कॉन्टैक्ट मिला, जिनका भी, किसी न किसी कारण से शरीर का कोई अंग, काटना पड़ा होगा। उसमें कई लोगों ने कुणाल से पूछा कि, वह कैसा महसूस करता है? क्या कोई मानसिक तनाव आदि तो नहीं है, किन्तु कुणाल पर प्रभु की, इतनी दया थी कि वह पहले दिन से ही संतुलित और आशावादी था। इस ग्रुप से कुणाल को एक और बात का पता चला। जो कि एक प्रकार का बहुत तेज़ गति से दर्द होता है, जिससे फैंटम पेन भी कहा जाता है। किन्तु इस संदर्भ में भी कुणाल पर प्रभु की दया थी। यह दर्द केवल उसने 2 बार ही महसूस किया था। ज़्यादा तक़लीफ़ से वह बचा रहा।

उसने निकली टांग तो लगवा ली, पर उसका प्रयोग ठीक से करना नहीं आता था। कोविड की वज़ह से, नकली टांग को ठीक से प्रयोग करना नहीं आया। तब उसने यू ट्यूब का सहारा लिया। जनवरी माह में उसने टांग लगवाई और मार्च महीने में वह गोवा घूमने भी चला गया। फिर कनाडा अपनी बहन के पास भी गया, एक वर्ष के लिए।

फिर अकेले माता-पिता की चिंता के कारण उसे वापस देश लौटना पड़ा। इस हादसे में उसके कार्य क्षेत्र ने भी कुणाल का पूरा समर्थन किया। आज भी वह खुशी से अपनी नौकरी कर रहा है। हफ्ते में केवल 2 दिन के लिए, वह गुरुग्राम स्तिथ अपने ऑफिस जाता है। इस हौसले को नमन है कुणाल। ❐

‘समाज और संस्कृति को जोड़ने का माध्यम है कला’

कला केवल रंगों और रेखाओं का मेल नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, परंपरा और जीवन मूल्यों का जीवंत प्रतिबिंब है। ऐसे ही विचारों को अपने जीवन में आत्मसात कर, कला को साधना और साधना को जीविका (करियर) का रूप देने वाली व्यक्तित्व हैं- श्रीमती सुमालता मट्टापार्ती जी। आंध्र प्रदेश में जन्मी, पश्चिम बंगाल में पली-बढ़ी और पिछले दो दशक से दिल्ली में रह रहीं सुमालता जी ने अपने जीवन की यात्रा बैंकिंग क्षेत्र से शुरू की थी। लेकिन मातृत्व को अपनाने के साथ ही उन्होंने एक नया मोड़ लिया और अपनी बचपन की रुचि चित्रकला को ही अपना जीवन बना लिया। आज वे न केवल एक सफल फ्रीलांस आर्टिस्ट हैं, बल्कि उड़ान और संस्कार भारती जैसी संस्थाओं के साथ जुड़कर अनेक कला प्रदर्शनी, कार्यशालाएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का सफल आयोजन भी कर रही हैं। उनकी पेंटिंग्स ललित कला अकादमी, एन.जी.एम.ए., आई.सी.सी.आर. और आई.जी.एन.सी.ए. जैसे राष्ट्रीय संस्थानों में प्रदर्शित हो चुकी हैं। सुमालता जी का मानना है कि “हर दिन एक नया सीखने का अवसर है, और कला वह साधना है जो हमें आत्मसंतोष के साथ संस्कृति से भी जोड़ती है।” सेवा समर्पण के लिए रंजना शर्मा ने उनसे लंबी बातचीत की। प्रस्तुत हैं उस बातचीत के प्रमुख अंश-

- **सबसे पहले हम जानना चाहेंगे कि कला की ओर आपका झुकाव कब और कैसे हुआ?**

उत्तर : बचपन से ही मुझे चित्रकारी का शौक रहा है। कला और संस्कृति को लेकर मेरी जिज्ञासा हमेशा से बहुत गहरी रही।

- **अपने जीवन की पृष्ठभूमि के बारे में पाठकों को बताइए।**

उत्तर : मेरा जन्म आंध्र प्रदेश के पूर्वी गोदावरी ज़िले में हुआ, लेकिन मेरा पालन-पोषण पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में हुआ। सन् 2002 से मैं दिल्ली में रह रही हूं। मैंने एम.बी.ए. (फाइनांस मार्केटिंग) की पढ़ाई की और बैंकिंग क्षेत्र में सिटी बैंक तथा एच.डी.एफ.सी. बैंक में कार्य किया।

- **आपने बैंकिंग करियर से कला के क्षेत्र की ओर कैसे कदम बढ़ाया?**

उत्तर : वर्ष 2012 में मैंने अपने बैंकिंग करियर से विराम लिया, क्योंकि मैं मातृत्व को अपनाना चाहती थी। उस समय मेरा बेटा और फिर दो साल बाद बेटी हुई। इसी दौरान मुझे अपने भीतर की कला को समय देने और अपने सपनों को करियर का रूप देने का अवसर मिला।

- **कला यात्रा की शुरुआत आपने किस प्रकार की?**

उत्तर : मैंने सबसे पहले अपनी कॉलोनी के बच्चों को

फाइन आर्ट सिखाना शुरू किया। फिर वर्ष 2015 से मैंने धीरे-धीरे अपनी पेंटिंग्स को पेशेवर स्तर पर प्रदर्शित करना शुरू किया। इसके बाद कई समूह कला प्रदर्शनी और संस्कृति मंत्रालय के विभिन्न कला आयोजनों में भाग लिया।

- **आपके इस सफ़र में किन संस्थाओं ने साथ दिया?**

उत्तर : मैं उड़ान जैसी सांस्कृतिक और सामाजिक संस्था से 2016 से जुड़ी हूँ और यहाँ टपेनंस ।तजे टमतजपबंस डमदजवत की भूमिका निभा रही हूँ। इसके अंतर्गत मैंने कलाकारों के लिए स्टूडियो और गैलरी विज़िट्स, ऑनलाइन एवं ऑफलाइन आर्ट एग्ज़िबिशन और वर्कशॉप्स का आयोजन किया। साथ ही मैं संस्कार भारती से भी सक्रिय रूप से जुड़ी हूँ। इन दोनों संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़ना मेरे लिए बहुत बड़ा अवसर रहा तथा कला एवं संस्कृति प्रबंधन का गहरा अनुभव मिला।

- **आप संस्कार भारती से कैसे जुड़ीं?**

उत्तर : मेरे पति श्री संजीव जी संघ में पश्चिमी विभाग कार्यवाह हैं और घर पर बैठकें होती रहती हैं। वहीं श्री दीपक सोनी जी, जो स्वयं एक कलाकार और संघ के कर्मठ कार्यकर्ता हैं, ने मेरा परिचय 'उड़ान' से करवाया। बाद में 'संस्कार भारती' से भी मेरा जुड़ाव वहीं से हुआ। आजकल मैं संस्कार भारती में मातृशक्ति संयोजिका, पश्चिमी विभाग का दायित्व संभाल रही हूँ।

- **व्यक्तिगत जीवन में आपका दृष्टिकोण क्या है, जिसने आपको आगे बढ़ाया?**

उत्तर : मैं हर दिन को सीखने का अवसर मानती हूँ। जीवन की चुनौतियाँ और अवसरों से सीखना ही मुझे एक बेहतर इंसान बनने में मदद करता है।

- **इस समय आप किस क्षेत्र में अध्ययनरत हैं?**

उत्तर : फिलहाल मैं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र से Cultural Management का अध्ययन कर रही हूँ, ताकि कला और संस्कृति की दुनिया में और बेहतर सेवा कर सकूँ। मेरा उद्देश्य है कि अपनी कला और ज्ञान के माध्यम से अपनी गौरवशाली संस्कृति का प्रचार-प्रसार करूँ।

- **अपनी प्रमुख उपलब्धियों के बारे में बताइए।**

उत्तर : मैंने ललित कला अकादमी, राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी (NGMA), साहित्य कला परिषद, आई.सी.सी.आर., आई.जी.एन.सी.ए. एन.डी.एम.सी. जैसे संस्थानों में समूह प्रदर्शनी, लाइव पेंटिंग और आर्ट कैंप्स में भाग लिया है। मेरी पेंटिंग "अहिल्याबाई होल्कर - एक गौरवशाली यात्रा" नामक पुस्तक के आवरण पृष्ठ पर प्रकाशित हुई। साथ ही मैंने दिल्ली यूनिवर्सिटी में ECA (Extra Curricular Activities) प्रवेश 2024 एवं 2025 के लिए जूरी सदस्य (कला) के रूप में भी योगदान दिया। संस्कार भारती के दिल्ली कला उत्सव 2023 और 2024 में, मैंने पूरे मनोयोग से अपनी भूमिका निभाई। युवा वर्ग हेतु चित्रकला प्रतियोगिता का सफलतापूर्वक संचालन किया। मेरे इस प्रयास से कार्यक्रम में अधिक दर्शकों की उपस्थिति रही।

- **अंत में पाठकों के लिए आप क्या संदेश देना चाहेंगी?**

उत्तर : मेरा मानना है कि हर इंसान के भीतर कोई न कोई प्रतिभा होती है। हमें बस सही समय पर उस प्रतिभा को पहचानना और उसे जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए। कला केवल आत्मसंतोष ही नहीं देती, बल्कि समाज और संस्कृति को जोड़ने का माध्यम भी बनती है। ❒

जनजातीय अस्मिता के अग्रज 'धरती आबा'

■ श्वेत कमल

मुण्डा जनजाति भारतीय उपमहाद्वीप का एक प्रमुख अतिप्राचीन जनजातीय समूह है, जो छोटा नागपुर पठार (झारखण्ड) में अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के साथ अनंत काल से निवास कर रहा है। बिरसा मुंडा (1875-1900) एक ऐसे भारतीय आदिवासी, स्वतंत्रता सेनानी और मुंडा जनजाति के लोकनायक थे, जिन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ 19वीं सदी के अंत में एक शक्तिशाली आदिवासी आंदोलन का नेतृत्व किया। बिरसा मुंडा जी को 1900 में आदिवासी लोगों को संगठित करने के आरोप में ब्रिटिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया तथा उन्हें दो साल का कठोर कारावास दिया गया। अंग्रेज़ों द्वारा जेल में ही जहर देकर उनकी निर्मम हत्या कर दी गई।

आरंभिक जीवन

इनका जन्म मुंडा जनजाति के गरीब किसान परिवार में झारखण्ड के खूंटी जिले के उलीहातु गाँव में हुआ था। इनके पिता जी का नाम सुगना पुर्ती और माता जी का नाम करमी पुर्ती था। बृहस्पतिवार को जन्म होने के कारण उनका नाम बिरसा रखा गया। साल्गा गाँव में प्रारम्भिक पढाई के बाद, इन्होंने चाईबासा विद्यालय के जर्मन मिशनरी स्कूल में शिक्षा प्राप्त की, जहाँ इन पर ईसाई मत अपनाने का दबाव था। बाद में आदिवासी संस्कृति के उपहास से असहमत होकर उन्होंने स्कूल छोड़ दिया। बिरसा मुंडा बाल्यकाल से ही सदैव अपने समाज की बुरी दशा के बारे में सोचते रहते थे, जो ब्रिटिश शासकों की शोषणकारी नीतियों का ही दुष्परिणाम थी। उन्होंने मुंडा समाज को अंग्रेजों के दमन चक्र से मुक्ति दिलाने के लिये अपना कर्मठ और जुझारू नेतृत्व प्रदान किया। जब 1894 में मानसून के असफल होने के कारण छोटा नागपुर पठार भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी, बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की।

संघर्ष और नेतृत्व

1. **आंदोलन:** 1899-1900 में उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और स्थानीय जमींदारों के खिलाफ एक आदिवासी विद्रोह, 'मुंडा विद्रोह' का नेतृत्व किया।
2. **उद्देश्य:** इस आंदोलन का उद्देश्य आदिवासी भूमि और सांस्कृतिक स्वायत्तता को पुनः प्राप्त करना था।
3. **गिरफ्तारी:** आदिवासियों को संगठित करने के कारण ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।
4. **उलगुलान विद्रोह:** उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ 'उलगुलान' आंदोलन का नेतृत्व किया, जिसका उद्देश्य आदिवासी भूमि और अधिकारों की रक्षा करना था। उन्होंने सामंती जमींदारी व्यवस्था का विरोध किया, जो आदिवासियों की पारंपरिक 'खुंटकट्टी' कृषि प्रणाली को खत्म कर रही थी।

मुंडा विद्रोह का नेतृत्व

1 अक्तूबर, 1894 को युवा सशस्त्र सुधारक के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजों से लगान (कर) माफी के लिये संघर्ष करने का निर्णय किया तथा अंग्रेजों और अंग्रेजियत के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कठोर कारावास की सजा दी गयी, लेकिन बिरसा और उनके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और जिससे उन्होंने अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके के लोग "धरती आबा" के नाम से पुकारा और पूजा करते थे। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

> 1894 को युवा सशस्त्र सुधारक के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजों से लगान (कर) माफी के लिये संघर्ष करने का निर्णय किया तथा अंग्रेजों और अंग्रेजियत के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया। 1895 में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कठोर कारावास की सजा दी गयी, लेकिन बिरसा और उनके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और जिससे उन्होंने अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया।

विद्रोह में भागीदारी और अन्त

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा मुंडा और उनके समर्थकों ने अंग्रेजों की नाकों चने चबवा रखा था। अगस्त, 1897 में बिरसा और उनके 400 सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई, जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी। लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं। जनवरी, 1900 डोम्बरी पहाड़ पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत सी महिलाएं व बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा मुंडा एक जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। इसके बाद बिरसा मुंडा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा मुंडा को भी 3 फरवरी, 1900 को चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। बिरसा मुंडा ने अपनी अन्तिम साँस 9 जून, 1900 को ली। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है।

सम्मान

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान के लिए उन्हें याद किया जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनका स्टेच्यू भी है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय विमानक्षेत्र भी है। 10 नवंबर, 2021 को भारत सरकार ने 15 नवंबर यानी बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। झारखंड में बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा और गुजरात में बिरसा मुंडा आदिवासी विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों का नाम उनके नाम पर रखा गया है। भारत में आदिवासी समाज के प्रथम प्रणेता और उनके अधिकारों के रक्षक के रूप बिरसा मुंडा को हमेशा याद किया जाता रहेगा। ❐

कौशल विकास : आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक सशक्त कदम

■ वीणा गर्ग

आज का युग ज्ञान और कौशल का युग है। बदलते समय के साथ जहाँ तकनीक और उद्योग तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं, वहीं प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि वह अपने भीतर ऐसे कौशल विकसित करे, जिससे न केवल उसका जीवन स्तर सुधरे, बल्कि देश की आर्थिक प्रगति में भी उसका योगदान हो। यही उद्देश्य लेकर भारत सरकार ने समय-समय पर कौशल विकास से जुड़ी कई योजनाएँ शुरू की हैं, जो युवाओं, महिलाओं, ग्रामीणों, किसानों और उद्योग जगत- सभी को नए अवसर प्रदान कर रही हैं।

कौशल केवल शिक्षा का विस्तार नहीं है, बल्कि यह "सीखने से कमाने" की प्रक्रिया है। जब व्यक्ति अपने हुनर को पहचानता है और उसे रोजगार से जोड़ता है, तब वह आत्मनिर्भर बनता है। आज के युग में केवल डिग्री नहीं, बल्कि प्रायोगिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल अधिक महत्व रखते हैं। यही कारण है कि सरकार ने "कौशल भारत-कुशल भारत" का नारा दिया है।

भारत सरकार की प्रमुख कौशल विकास योजनाएँ

दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (DDU-GKY)

लक्ष्य : ग्रामीण युवाओं को स्थायी रोजगार दिलाना।

विशेषता : यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों के 15-35 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं को उद्योग-आधारित प्रशिक्षण देती है। इस योजना के तहत युवाओं को कंप्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक्स, हेल्थकेयर, होटल मैनेजमेंट आदि क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण के बाद रोजगार की गारंटी दी जाती है। यह योजना गरीब परिवारों के युवाओं को शहरी स्तर के रोजगार अवसरों से जोड़ती है।

कौशल हाट एवं कौशल मेले

भारत सरकार ने समय-समय पर "कौशल मेला" जैसे कार्यक्रम आयोजित किए हैं, जहाँ प्रशिक्षित युवाओं को सीधा उद्योगों से जोड़ा जाता है। इन मेलों में युवाओं के लिए ऑन-स्पॉट इंटरव्यू, कैरियर काउंसलिंग, और स्टार्टअप सलाह भी दी जाती है।

उद्यमिता विकास कार्यक्रम (म्क्च)

कौशल विकास केवल नौकरी पाने के लिए नहीं, बल्कि नौकरी देने की क्षमता विकसित करने के लिए भी है। इसी दृष्टि से सरकार ने उद्यमिता विकास योजनाएँ शुरू की हैं -

जैसे: स्टार्टअप इंडिया।

जनजातीय एवं महिला कौशल विकास योजनाएँ

सरकार ने विशेष रूप से महिलाओं और जनजातीय समुदायों के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम आरंभ किए हैं।

महिला कौशल केंद्र

STEP (Support to Training and Employment Programme for Women)]

TRIFED द्वारा जनजातीय शिल्प प्रशिक्षण कार्यक्रम

इनके माध्यम से महिलाएँ सिलाई, कढ़ाई, हस्तशिल्प, मधुमक्खी पालन, खाद्य प्रसंस्करण जैसे कौशल सीख कर आत्मनिर्भर बन रही हैं।

कृषि क्षेत्र में कौशल विकास

कृषि केवल खेती तक सीमित नहीं रही है। सरकार ने किसानों के लिए भी कृषि कौशल केंद्र (Agri Skill Centres) स्थापित किए हैं, जहाँ जैविक खेती, डेयरी, मत्स्य पालन, सौर ऊर्जा आधारित खेती आदि में प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे किसान आधुनिक तकनीक से जुड़ रहे हैं और कम लागत में अधिक उत्पादन कर पा रहे हैं।

कहानी : मध्य प्रदेश के किसान राम ने "फार्म मशीनरी ट्रेनिंग" ली। आज वे अपने गाँव में कृषि यंत्र किराये पर देकर अच्छी आमदनी कर रहे हैं।

डिजिटल कौशल और नई पीढ़ी

भारत डिजिटल युग में प्रवेश कर चुका है। इसलिए सरकार ने युवाओं को डिजिटल कौशल से लैस करने के कार्यक्रम शुरू किए हैं जैसे डिजिटल साक्षरता अभियान (DISHA).

PM e-Vidya

FutureSkills PRIME (आईटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सिक्योरिटी आदि में प्रशिक्षण)

इन योजनाओं का लक्ष्य है कि भारत का हर युवा टेक्नोलॉजी का सृजनकर्ता बने, केवल उपभोक्ता नहीं।

कौशल विकास से सामाजिक परिवर्तन

कौशल विकास का सबसे बड़ा प्रभाव समाज पर दिखाई देता है। जहाँ पहले ग्रामीण युवा बेरोजगार होकर शहरों की ओर पलायन करते थे, वहीं अब अपने गाँव में ही रोजगार और सम्मान पा रहे हैं। महिलाएँ आत्मनिर्भर होकर परिवार की आर्थिक रीढ़ बन रही हैं।

कौशल वह पूँजी है, जो जितनी बाँटो उतनी बढ़ती है।

भविष्य की दिशा

भारत सरकार अब "स्किल इंडिया मिशन 2.0" के तहत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ग्रीन एनर्जी, इलेक्ट्रिक व्हीकल्स, हेल्थ टेक्नोलॉजी जैसे नए क्षेत्रों में प्रशिक्षण पर ध्यान दे रही है। इससे भारत के युवा वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम होंगे।

निष्कर्ष

कौशल विकास केवल सरकार की नीति नहीं, बल्कि नए भारत का निर्माण अभियान है।

जब हर युवा, हर महिला, हर किसान अपने-अपने क्षेत्र में कुशल बनता है, तो देश आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता है। आज आवश्यकता है कि हम सभी इस आंदोलन का हिस्सा बनें। "कौशल से सशक्त भारत, कौशल से समृद्ध भारत" यही हमारे विकास की सच्ची पहचान बने।

कौशल विकास से तात्पर्य किसी व्यक्ति की कार्यक्षमता और दक्षता में वृद्धि करने वाली प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा उसे किसी विशिष्ट कार्य या पेशे में निपुण बनाया जाता है। यह शिक्षा से आगे बढ़कर व्यावहारिक ज्ञान और तकनीक प्रदान करने पर केंद्रित है, जो व्यक्ति को रोजगार प्राप्त करने या स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने के योग्य बनाता है। आज के तेज़ी से बदलते वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ प्रौद्योगिकी और नवाचार हर दिन नए मानक स्थापित कर रहे हैं, कौशल विकास किसी भी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास की नींव बन चुका है। भारत जैसे युवा बहुल देश के लिए, जहाँ एक बड़ी आबादी कार्यशील आयु वर्ग में है, कौशल विकास 'जनसांख्यिकीय लाभांश' (Demographic Dividend) को वास्तविक आर्थिक शक्ति में बदलने का सबसे शक्तिशाली माध्यम है।

कौशल विकास का महत्व

कौशल विकास का महत्व व्यक्तिगत और राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर बहुआयामी है।

व्यक्तिगत सशक्तिकरण और रोजगार सृजनः कौशल व्यक्ति को आत्मनिर्भरता प्रदान करता है। औपचारिक शिक्षा अक्सर सैद्धांतिक ज्ञान देती है, जबकि कौशल प्रशिक्षण व्यावहारिक दक्षता प्रदान करता है। यह युवाओं को बाजार की मांग के अनुसार तैयार करता है, जिससे वे आसानी से रोजगार प्राप्त कर पाते हैं। चाहे वह तकनीकी कौशल हो जैसे कोडिंग, मशीन संचालन, या गैर-तकनीकी कौशल जैसे संचार, नेतृत्व, और समस्या-समाधान, ये सभी व्यक्ति की आय क्षमता को बढ़ाते हैं और उन्हें गरीबी के चक्र से बाहर निकालने में मदद करते हैं।

आर्थिक विकास और उत्पादकता में वृद्धिः एक कुशल कार्यबल देश की समग्र उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि करता है। कुशल श्रमिक कम समय में बेहतर गुणवत्ता का काम करते हैं, जिससे उत्पादन लागत कम होती है और वस्तुओं तथा सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार आता है। यह घरेलू और अंतरराष्ट्रीय, दोनों बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाता है। उद्योगों को कुशल कारीगर मिलने से उत्पादन की गति बढ़ती है, जो देश की सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में सीधा योगदान करता है।

उद्यमिता को बढ़ावाः कौशल विकास केवल नौकरी ढूंढने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उद्यमिता (Entrepreneurship) की भावना को भी पोषित करता है। प्रशिक्षण में व्यवसाय प्रबंधन, वित्तीय साक्षरता और बाजार की समझ शामिल होने से युवा न केवल नौकरीपेशा बनते हैं, बल्कि नौकरी देने वाले भी बन सकते हैं। यह छोटे और मध्यम उद्योगों (MSMEs) को बढ़ावा देता है, जो किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होते हैं।

सामाजिक समावेश और असमानता में कमी : कौशल विकास समाज के वंचित और कमजोर वर्गों,

विशेषकर महिलाओं, ग्रामीण युवाओं और स्कूल छोड़ने वालों को मुख्यधारा में लाने का एक प्रभावी उपकरण है। यह उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने और समाज के विकास में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर प्रदान करता है, जिससे सामाजिक असमानता और क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने में मदद मिलती है।

भारत में कौशल विकास की पहल

भारत सरकार ने कौशल विकास के महत्व को पहचानते हुए इस दिशा में कई महत्वाकांक्षी योजनाएं शुरू की हैं। 'स्किल इंडिया मिशन' (Skill India Mission) इसी दिशा में एक व्यापक पहल है।

प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY): जुलाई 2015 में शुरू की गई यह योजना कौशल विकास मिशन की एक प्रमुख योजना है। इसका उद्देश्य देश के युवाओं को उद्योग-संबंधी कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है, ताकि वे बेहतर आजीविका कमा सकें। इसमें न केवल नए प्रशिक्षण पर जोर दिया जाता है, बल्कि पारंपरिक कारीगरों के मौजूदा कौशल को पहचानना और प्रमाणित करना भी शामिल है (पूर्व शिक्षण की मान्यता - RPL)। अब तक लगभग 1.5 करोड़ युवाओं को प्रशिक्षण मिल चुका है।

सीखो, कमाओ, आगे बढ़ो - यही मूल मंत्र है इस योजना का।

प्रेरक कहानी : राजस्थान की एक युवती मीना च्डइ्नटल से ब्यूटी एंड वेलनेस कोर्स करके अपने गांव में मीना ब्यूटी स्टूडियो चला रही है और पांच युवतियां को रोजगार दे रही है।

राष्ट्रीय कौशल विकास निगम (NSDC): यह सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल पर स्थापित एक गैर-लाभकारी कंपनी है, जिसका उद्देश्य कौशल विकास के प्रयासों को उत्प्रेरित करना और उच्च गुणवत्ता तथा लाभ-उन्मुख व्यावसायिक संस्थानों के निर्माण को बढ़ावा देना है।

जन शिक्षण संस्थान (JSS): ये मुख्य रूप से गैर-साक्षर, नव-साक्षर और 8वीं कक्षा तक स्कूल छोड़ने वाले व्यक्तियों को व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे वे स्थानीय मांग के अनुरूप रोजगार पा सकें।

अन्य योजनाएं: इनके अलावा, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (ITI), शिक्षुता (Apprenticeship) प्रशिक्षण योजना और विभिन्न मंत्रालयों द्वारा चलाई जा रही क्षेत्र-विशेष की कौशल योजनाएं भी इस प्रयास को मजबूती प्रदान कर रही हैं।

चुनौतियाँ और आगे की राह

कौशल विकास के प्रयासों के बावजूद, भारत को अभी भी कई महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

गुणवत्ता और प्रासंगिकता: सबसे बड़ी चुनौती प्रशिक्षण की गुणवत्ता और उद्योग की वास्तविक मांगों के बीच तालमेल की कमी है। कई बार प्रशिक्षण पाठ्यक्रम पुराने पड़ जाते हैं और उनमें नवीनतम तकनीकें शामिल नहीं होतीं।

प्रशिक्षित प्रशिक्षकों की कमी: कौशल प्रशिक्षण देने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले और पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षकों (Trainers) की उपलब्धता एक बड़ी बाधा है।

सामाजिक मानसिकता: पारंपरिक रूप से भारत में व्यावसायिक प्रशिक्षण को अकादमिक शिक्षा से कमतर समझा जाता है। इस सामाजिक मानसिकता को बदलना और 'स्किल' को सम्मान दिलाना आवश्यक है।

वित्तीय संसाधन और ढांचागत कमी: देश के दूरदराज के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करने और उन्हें आवश्यक उपकरणों से लैस करने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता है।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, सरकार, उद्योग और शिक्षण संस्थानों के बीच घनिष्ठ सहयोग की आवश्यकता है। प्रशिक्षण को उद्योग की जरूरतों के अनुरूप बनाने के लिए नियमित पाठ्यक्रम संशोधन आवश्यक है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मॉडल को मजबूत करने और प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। इसके अलावा, शिक्षुता (Apprenticeship) को मुख्यधारा में लाकर छात्रों को 'काम करते हुए सीखने' का अवसर देना चाहिए।

निष्कर्ष

कौशल विकास केवल एक सरकारी योजना या कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह एक राष्ट्र की दीर्घकालिक रणनीति का अभिन्न अंग है। यह भारत की विशाल युवा आबादी को एक बोझ के बजाय एक अमूल्य संसाधन में बदलने की कुंजी है। यदि भारत को विश्व स्तर पर एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरना है, तो उसे अपने युवाओं को इक्कीसवीं सदी के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करना होगा। "स्किल इंडिया" पहल में निहित यह दृष्टिकोण ही आत्मनिर्भर भारत के निर्माण और प्रत्येक नागरिक के लिए उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करने का मार्ग प्रशस्त करेगा। सतत और समावेशी विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कौशल विकास एक अनिवार्य कदम है। ❐

मातृभूमि के लिए दी प्राणों की आहुति

■ कमलेश त्रिपाठी

भारत के इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई का नाम साहस, देशभक्ति और अदम्य आत्मविश्वास के प्रतीक के रूप में सदा अमर रहेगा। वे केवल झाँसी की रानी ही नहीं थीं, बल्कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पहली वीरांगना थीं, जिन्होंने अंग्रेज़ों के खिलाफ अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरता से युद्ध लड़ा।

प्रारंभिक जीवन

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवम्बर, 1828 को वाराणसी में हुआ था। उनका वास्तविक नाम मणिकर्णिका ताम्बे था और लोग उन्हें प्यार से 'मणू' कहकर बुलाते थे। उनके पिता का नाम मोरोपंत ताम्बे और माता का नाम भागीरथी बाई था। मणिकर्णिका बचपन से ही अत्यंत साहसी, चंचल और तेजस्वी थीं। उन्होंने बचपन में ही घुड़सवारी, तलवारबाज़ी और धनुर्विद्या जैसी कलाओं में निपुणता हासिल कर ली थी।

विवाह और झाँसी की रानी बनना

1842 में मणिकर्णिका का विवाह झाँसी के महाराजा गंगाधर राव न्यूवलकर से हुआ। विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। 1851 में उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया, किंतु कुछ ही समय बाद उसकी मृत्यु हो गई। तब उन्होंने दामोदर राव नामक एक बालक को गोद लिया।

अंग्रेज़ों की नीति और झाँसी का विलय

1853 में महाराजा गंगाधर राव का निधन हो गया। अंग्रेज़ों ने लॉर्ड डलहौज़ी की "लैप्स पॉलिसी" (Doctrine of Lapse) के तहत यह कहकर झाँसी को हड़प लिया कि दत्तक पुत्र उत्तराधिकारी नहीं हो सकता। रानी ने इस अन्याय के खिलाफ दृढ़ता से कहा– "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी!" यह वाक्य पूरे देश में आज़ादी की ज्वाला भड़काने वाला बन गया।

1857 का विद्रोह और रानी का योगदान

1857 में जब भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम आरंभ हुआ, तब रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी की स्वतंत्रता के लिए युद्ध का बिगुल बजाया। उन्होंने सेना को संगठित किया और महिलाओं को भी युद्ध प्रशिक्षण दिया। रानी ने अपने विश्वसनीय सेनापति टांट्या टोपे और झलकारी बाई के साथ मिलकर अंग्रेज़ों से भीषण युद्ध लड़ा। उन्होंने घोड़े बादल पर सवार होकर युद्धक्षेत्र में अद्‌भुत पराक्रम दिखाया।

वीरगति

18 जून, 1858 को ग्वालियर के निकट कोटा-की-सराय नामक स्थान पर रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज़ों से युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त की। मृत्यु के समय उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर मातृभूमि के प्रति अपनी निष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत किया।

रानी लक्ष्मीबाई का महत्व और प्रेरणा

रानी लक्ष्मीबाई केवल एक योद्धा नहीं, बल्कि भारतीय नारी शक्ति की प्रतीक थीं। उनकी वीरता ने अंग्रेज़ों के मन में भय और भारतीयों के हृदय में देशभक्ति की ज्वाला भर दी। वे आने वाली पीढ़ियों के लिए यह संदेश छोड़ गई कि– "स्वतंत्रता किसी भी मूल्य पर छीनी नहीं जा सकती।"

निष्कर्ष

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी साहस, आत्मबल और देशप्रेम से कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता। झाँसी की रानी सदा अमर रहेंगी और उनका नाम इतिहास के स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेगा। ❐

प्रदूषण से प्रभावित मानव जीवन

■ आचार्य अनमोल

आजकल जीवन में हर तरफ प्रदूषण ही प्रदूषण दिखाई दे रहा है। कहीं पर यह प्रदूषण प्राकृतिक रूप से हमें प्रभावित कर रहा है, तो कहीं पर यह प्रदूषण मानसिक रूप से ही प्रभावित कर रहा है। ये दोनों ही प्रदूषण मानव जीवन के लिए हानिकारक हैं। यह भी ध्यान रहे कि इन दोनों ही प्रदूषणों के जन्मदाता मनुष्य हैं, जो उनकी स्वार्थवृत्ति के कारण उपजे हैं। इसी प्रदूषण से चिंतित होकर प्रकृति के हितचिंतक चिंतित हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भी अपने 'पंच परिवर्तन' में वैश्विक पर्यावरण की चिंता व्यक्त करते हुए मानव जीवन को उसी अनुरूप ढालने के लिए प्रेरित किया है। मानव के मन में दूसरे मानव के प्रति फैला हुआ द्वेष प्राकृतिक प्रदूषण से अधिक विषैला प्रदूषण है। प्राकृतिक प्रदूषण किन्हीं योजनाओं के द्वारा, प्रयोग के द्वारा और जीवन में संयम वरतने के द्वारा दूर हो सकता है लेकिन लोगों के मन में आपस में वैमनस्यता, जातिवाद, छोटा-बड़ा आदि का भाव यदि फैल चुका है तो उसे जल्दी से ठीक करना कठिन है। इसलिए इस दूसरे वाले प्रदूषण को दूर करना नितांत आवश्यक है।

प्राकृतिक प्रदूषण के लिए अनेक कारण जिम्मेदार हो सकते हैं। इनमें फैक्ट्री और कारखानों से उठता हुआ धुआँ, भोजन बनाने के लिए कोयलों और चूल्हों का प्रयोग, पेट्रोल-डीजल के वाहनों से निकला हुआ धुआँ, कूड़ा-करकट जलाने से निकला हुआ धुआँ इसके लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार माने जाते हैं।

सर्दियों की शुरूआत के साथ ही महानगरों का बुरा हाल जगजाहिर है। लोगों को साँस लेने तक में कठिनाई महसूस होने लगती है। हालात इस कदर बदतर हो जाते हैं कि कभी शहर की गाड़ियों को सड़कों से कम करने के लिए सम-विषय फॉर्मूला अपनाना पड़ता है, तो कभी स्कूल बंद करने पड़ते हैं। पड़ोसी राज्यों में किसानों द्वारा खेतों में जलाई जाने वाली पराली के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की माँग होने लगती है।

ग्रीन पटाखों के पक्ष में कहा जा रहा है कि ये पटाखे पर्यावरण के अनुकूल हैं और प्रदूषण नहीं बढ़ाते। जबकि अध्ययनों से यह बात आम हो चुकी है कि परंपरागत पटाखों के मुकाबले ग्रीन पटाखों में प्रदूषक तत्व मात्र 30 प्रतिशत कम होते हैं। जाहिर है, इन पटाखों से 70 प्रतिशत प्रदूषण फैलता ही है।

सनातन संस्कृति को मानने वाले लोगों का कहना है कि कुछ चीजों का संबंध सनातन के विरोध में भी जोड़ा जा रहा है। दिल्ली सरकार ने हरित पटाखे छोड़ने की इजाजत पाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाने का फैसला किया। सर्वोच्च न्यायालय ने उस पर विचार किया और दीपावली में ग्रीन पटाखे छोड़ने का आदेश भी दिया। केवल दीपावली के अवसर पर छोड़ने वाले पटाखों को प्रदूषण का कारण बताना ठीक नहीं है। इसके अनेक कारण हैं। यह उन लोगों को समझने की जरूरत है, जो किसी भी सनातनी त्योहार के समय प्रदूषण के नाम पर अपनी कुत्सित सोच को सामने रखकर हल्ला मचाते हैं। ❐

नारियल पानी के लाभ

■ रितेश सिंह

नारियल एक ऐसा फल है जिसका हर हिस्सा बहुत उपयोगी होता है। सदियों पहले से समुद्री तटीय इलाकों में नारियल का उपयोग खानपान और सौंदर्य के लिए किया जाता रहा है। नारियल का पानी स्वादिष्ट और पौष्टिक होने के साथ यह कई तरह के खनिज और पोषक तत्वों से भरपूर होता है। आयुर्वेद में भी इसके गुणों के बारे में विस्तार से बताया गया है। कच्चे या हरे नारियल के अंदर मौजूद पानी को पौष्टिक पेय माना गया है।

हर उम्र के लिए फायदेमंद

नारियल पानी हर उम्र के लोगों के लिए फायदेमंद है। अगर आप समुद्र तटीय इलाकों में रहते हैं तो इसकी उपयोगिता और ज्यादा बढ़ जाती है। कई चिकित्सक गर्मियों के मौसम में नियमित रूप से नारियल पानी पीने की सलाह देते हैं। अगर आपको तेज प्यास लगी है और पानी पीने से नहीं बुझ रही है तो ऐसे में नारियल पानी का सेवन करें। नारियल पानी प्यास बुझाने में उपयोगी है। शरीर में पानी की कमी (डिहाइड्रेशन) होने पर भी नारियल पानी पीना फायदेमंद है।

नारियल का पानी शरीर में जरूरी खनिज लवणों की कमी दूर करता है। शरीर को ठंडक पहुंचाता है। शरीर की ताकत बढ़ाता है। पाचक अग्नि को बढ़ाता है। लीवर की गर्मी दूर करता है। किडनी की सूजन कम करता है। माइग्रेन के दर्द से आराम दिलाता है। चेहरे की चमक बढ़ाता है। वात और पित्त को संतुलित करता है। मूत्र प्रणाली से जुड़े अंगों को शुद्ध करता है।

खनिज लवणों की कमी को पूरा करता है

कई बार डायरिया या दस्त होने पर शरीर में जरूरी खनिज लवणों (इलेक्ट्रोलाइट्स) की काफी कमी हो जाती है जिनकी आपूर्ति ना होने पर समस्या और बढ़ने का खतरा रहता है। कच्चे नारियल का पानी इन खनिज लवणों से भरपूर होता है। इसलिए ऐसे मौकों पर नारियल पानी पीना लाभकारी होता है। यह शरीर में पानी की कमी दूर करने के साथ-साथ खनिज लवणों की आपूर्ति भी कर देता है।

पेट की गर्मी को करता है शांत

नारियल पानी की तासीर ठंडी होती है। आयुर्वेद में भी इसके शीतल गुणों के बारे में बताया गया है। इसलिए गर्मी के दिनों में इसे पीना सेहत के लिए लाभकारी होता है। यह शरीर और पेट की गर्मी को शांत करती है और शरीर

को ठंडक पहुंचाती है। आयुर्वेद में नारियल पानी के बलदायक गुणों के बारे में बताया गया है। जिसके अनुसार नियमित रूप से नारियल पानी पीने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता के साथ-साथ शारीरिक शक्ति भी बढ़ती है। इसलिए शारीरिक रूप से कमजोर लोगों को भी नियमित रूप से थोड़ी मात्रा में नारियल पानी पीना चाहिए।

पाचक अग्नि को बढ़ाता है

आयुर्वेद के अनुसार अगर आपकी पाचक अग्नि कमजोर है तो इसका मतलब है कि आप पेट से जुड़ी कई तरह की बीमारियों को बढ़ावा दे रहे हैं। इसलिए अपने खानपान में उन चीजों को शामिल करें जो पाचक अग्नि को बढ़ाते हैं। ऐसे में नारियल पानी आपके लिए काफी उपयोगी हो सकता है। इसके नियमित सेवन से पाचक अग्नि बढ़ती है और पेट से जुड़ी कई बीमारियों से बचाव होता है।

लीवर की गर्मी दूर करता है

लीवर हमारे शरीर का बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। अक्सर गलत खानपान और कुछ अन्य कारणों की वजह से लीवर की गर्मी और उसमें सूजन बढ़ जाती है, जिससे और कई तरह की समस्याएं होने लगती हैं। ऐसे में अगर आप नारियल पानी पीते हैं तो यह लीवर की गर्मी को दूर करता है और पेट में सूजन, पाचन खराब होने जैसे लक्षणों से आराम दिलाता है।

किडनी की सूजन कम करता है

किडनी में सूजन होना एक गंभीर बीमारी है। आयुर्वेद के अनुसार कच्चे नारियल का पानी पीने से किडनी की सूजन कम होती है।

माइग्रेन के दर्द से आराम दिलाता है

कच्चे नारियल का पानी माइग्रेन में होने वाले सिरदर्द में भी उपयोगी है। नारियल के पानी को नाक में डालने से माइग्रेन का दर्द कम होता है।

चेहरे की चमक बढ़ाता है

अगर आप चेहरे पर बार-बार निकलने वाले मुंहासों और दाग धब्बों से परेशान हैं तो नारियल पानी का उपयोग करें। नारियल पानी से नियमित चेहरा धोने से चेहरे के मुंहासे और झाइयाँ कम होती हैं और चेहरे की चमक बढ़ती है।

वात और पित्त को संतुलित करता है

कच्चे नारियल का पानी शरीर में वात एवं पित्त दोष की अनियमितता को संतुलित करता है। वात और पित्त दोष के असंतुलन से होने वाले रोगों को दूर करता है।

मूत्र प्रणाली से जुड़े अंगों को शुद्ध करता है

अक्सर गलत खानपान और अनियमित दिनचर्या का असर मूत्र प्रणाली से जुड़े अंगों (मूत्राशय, मूत्र मार्ग आदि) पर भी पड़ता है। इस वजह से मूत्र संबंधी कई तरह की बीमारियाँ बढ़ने का खतरा रहता है। इन रोगों में ब्लैडर में अशुद्धता, बार-बार पेशाब आना, पेशाब में रुकावट जैसी समस्याएं शामिल हैं। नारियल पानी मूत्र संबंधी अंगों को शुद्ध करता है जिससे इन बीमारियों का खतरा कम होता है। हालांकि अगर आप इन समस्याओं के लिए नारियल पानी का सेवन कर रहे हैं तो चिकित्सक की सलाह अनुसार करें।

कई चिकित्सक गर्मियों के मौसम में नियमित रूप से नारियल पानी पीने की सलाह देते हैं। अगर आपको तेज प्यास लगी है और पानी पीने से नहीं बुझ रही है तो ऐसे में नारियल पानी का सेवन करें। नारियल पानी प्यास बुझाने में उपयोगी है। शरीर में पानी की कमी (डिहाइड्रेशन) होने पर भी नारियल पानी पीना फायदेमंद है।

नारियल पानी कब पीना चाहिए

वैसे तो नारियल पानी का सेवन आप किसी भी मौसम में कर सकते हैं। लेकिन गर्मियों के मौसम में इसका सेवन ज्यादा लाभकारी माना जाता है। आज कल अधिकांश लोग गर्मियों के दिनों में अपनी प्यास बुझाने के लिए कार्बोनेटड ड्रिंक्स, कोल्डड्रिंक्स आदि का सेवन करते हैं। जबकि रसायनु-युक्त ये चीजें आपकी सेहत को नुकसान पहुंचाती हैं। इनकी बजाय अगर आप गर्मियों में नारियल पानी का सेवन करें तो इससे प्यास भी आसानी से बुझेगी और कई तरह की हानिकारक बीमारियों से बचाव भी होगा। छोटे बच्चों को किसी भी हाल में कोल्डड्रिंक ना पीने दें, बल्कि उन्हें नारियल पानी पीने की आदत डलवायें।

कितनी मात्रा में पिएं नारियल पानी

इसकी निर्धारित मात्रा के बारे में आयुर्वेद में कोई उल्लेख नहीं है। अगर आप किसी बीमारी के घरेलू उपाय के रूप में इसका सेवन कर रहे हैं तो कृपया किसी आयुर्वेदिक चिकित्सक की सलाह के अनुसार सेवन करें। ❐

सेवा बस्ती में दीपावली उत्सव

गत 16 अक्तूबर को किरोड़ीमल कॉलेज की युवा 'अनुभूति' इकाई द्वारा दीपावली के पावन अवसर पर सेवा बस्ती, सिगरेट वाला बाग, भामाशाह रोड, न्यू पुलिस लाइन, सेवा भारती स्कूल में विशेष दीपावली उत्सव का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य था बच्चों और उनके परिवारों के बीच खुशी, प्रेम और उत्सव की भावना को प्रसारित करना, "राष्ट्र सर्वोपरि" के मूल्यों को बढ़ावा देना, और युवाओं में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 11:30 बजे हुआ। युवा अनुभूति इकाई के सह-समन्वयक डॉ. दीपिका शर्मा और यश मिश्रा के नेतृत्व में सभी सदस्य ने सक्रिय भागीदारी की। इस अवसर पर डॉ. प्रतिभा त्रिपाठी (युवा, सोशल वर्क प्रान्त संयोजिका), पारुल जी (युवा, झंडेवालान विभाग सह-संयोजिका) की गरिमामयी उपस्थिति रही। युवा अनुभूति इकाई के प्रमुख सदस्यों में भास्कर पांडे और नितिन कुमार (सामाजिक कार्य), केशव (मीडिया प्रभाग), सुश्री आनया मनोज और सुश्री अनु सिंह (स्वास्थ्य और कल्याण प्रभाग) सहित श्रीयांशी अन्य सदस्य ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

युवा टीम ने सेवा बस्ती का दौरा कर बच्चों और उनके परिवारों के बीच दीवाली के लिए आवश्यक सामग्री जैसे मिठाइयाँ, दीये और अन्य उपयोगी वस्तुओं का वितरण किया। इस पहल ने समुदाय में उत्सव की गर्माहट और एकता की भावना को बढ़ावा दिया।

सांस्कृतिक और जागरूकता गतिविधियाँ

बच्चों के साथ संवादात्मक सत्र आयोजित किए गए, जिसमें दीवाली के महत्व, स्वच्छता और पर्यावरण-अनुकूल उत्सव मनाने के बारे में जागरूकता फैलाई गई। यूनिट के सभी सदस्य बच्चों के साथ खेल खेले और उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहित किया।

यह आयोजन "राष्ट्र-प्रथम सेवा" के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है, जिसमें सामुदायिक सेवा और सामाजिक उत्थान पर विशेष जोर दिया गया। इसने न केवल सेवा बस्ती के निवासियों के जीवन में खुशी और उत्साह का संचार किया, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी और सहानुभूति की भावना को भी मजबूत किया। यह कार्यक्रम सामुदायिक एकता, परस्पर सहयोग और सामाजिक समावेशिता को बढ़ावा देने में एक मील का पत्थर साबित हुआ। यह दीवाली उत्सव किरोड़ीमल कॉलेज की युवा अनुभूति इकाई के लिए एक प्रेरणादायी अनुभव रहा। सभी सदस्य, समन्वयकों और अतिथियों के सहयोग से यह कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा। इस आयोजन ने दीवाली के प्रकाश को न केवल दीयों में, बल्कि बच्चों और उनके परिवारों के दिलों में भी प्रज्वलित किया। ❐

पंच परिवर्तन और अपना छठ महापर्व

1. **स्व का बोध–**
   - स्व भाषा के छठ लोक गीत
   - स्व भूषा साड़ी–धोती का ही उपयोग
   - सामूहिक भजन अर्थात घरों एवं घाटों पर सामूहिक पूजन
   - अपने भवन की सज्जा हिन्दू रीति–नीति के अनुसारआरत, चावल के आटे से बने पारंपरिक सजावटी घोल, सिंदूर, आम के पल्लव, गेंदे के फूल, केले के पत्ते आदि से
   - भ्रमण छठ घाटों के भ्रमण में पूर्ण सात्विकता का भाव
   - सामूहिक भोजन–नहाय–खाय एवं खरना का महाप्रसाद
2. **नागरिक कर्तव्य–**
   - सामाजिक स्वच्छता का विशेष अभियान।
   - छठ घाटों तक जाने वाली सड़कों की साफ–सफाई।
   - छठ घाटों की विशेष स्वच्छता।
   - छठ घाटों पर भीड़ नियंत्रण की सामाजिक व्यवस्था।
3. **कुटुम्ब प्रबोधन**
   - छठ पूजा के समय देश–विदेश में बिखरा हुआ परिवार एक ही छत के नीचे छठ महापर्व मनाता है।
   - यह पर्व संयुक्त परिवार व्यवस्था के महत्व को वर्ष में एक बार प्रत्यक्ष अनुभव कराता है।
   - परिवार की सभी महिलाओं को स्वर–से–स्वर मिलाकर सामूहिक गीत गाने का अभ्यास कराता है।
   - परिवार के सभी सदस्य एक साथ मिलकर ठेकुआ जैसे पारंपरिक पकवान बनाने एवं प्रसाद के रूप में ग्रहण करने का आनंद उठाते हैं।
   - छठ घाटों पर पारिवारिक एकजुटता का भाव सहज रूप से दिखता है।
4. **पर्यावरण संरक्षण–**
   - हम भारतीय पर्यावरण संरक्षक नहीं, अपितु पर्यावरण पूजक हैं। इस भाव का स्वाभाविक प्रस्फुटन है छठ महापर्व।
   - भगवान सूर्य इस ब्रह्मांड के अनन्य ऊर्जा के स्रोत हैं। अतः उनके प्रति हमारी कृतज्ञता का भाव है यह छठ पूजन।
   - अपना घर–परिवेश, गलियों, जल स्रोतों के सामूहिक स्वच्छता वर्ष में कम–से–कम एक बार छठ पूजा के बहाने हो जाती है।
   - ऋतु फलों का उपयोग भी पर्यावरण संरक्षण के महत्व को बढ़ावा देता है।
   - गौ माता के अमृत तुल्य दूध के उपयोग, गोबर का पूजन एवं स्वच्छता में उपयोग गौ माता के संरक्षण को बढ़ावा देती है।
   - छठ पूजा के उपरांत लटलटिया (अपामार्ग), माटी पूजन भी पर्यावरण पूजन का अनुपम उदाहरण है।
5. **सामाजिक समरसता–**
   - छठ घाटों पर सामाजिक समरसता का सहज भाव देखा जा सकता है।
   - एक साथ सामूहिक अर्घ्य दान करना।
   - एक दूसरे से मिलबाँटकर प्रसाद ग्रहण करना।
   - इस पर्व में कोई पुरोहित नहीं होते अर्थात प्रत्येक छठ व्रत करने वाला ही पुरोहित होता है।
   - समाज का हर वर्ग कंधे से कंधा मिलाकर छठ घाटों एवं गलियों की सामूहिक स्वच्छता के अभियान में लगते हैं। ❐

जब बालक भामाशाह ने एक गरीब बच्चे को अपने कपड़े दिए

■ संजय जिंदल

एक बार मेवाड़ के नलवा गाँव में त्योहार का दिन था। भामाशाह की माता शांति बाईजी और पिता भारमल जी (क़िलेदार) ने उसके लिए एक नया रेशमी पोशाक सिलवाया था- सुंदर, चमकदार और कीमती। भामाशाह उस पोशाक को पहनकर आँगन में आया ही था कि उसने देखा- घर की दासी का छोटा बेटा दरवाज़े के पास खड़ा है। उसके तन पर पुराने, फटे कपड़े थे। वह चुपचाप भामाशाह को देख रहा था-उसके मन में इच्छा थी कि काश, उसके पास भी ऐसे कपड़े होते। भामाशाह उसके पास गया और बोला, "तूने नए कपड़े क्यों नहीं पहना?" दासी-पुत्र बोला, "हम गरीब हैं सेठजी- माँ कहती हैं, अगले साल दिला दूँगी।" यह सुनते ही बालक भामाशाह ने बिना सोचे-समझे अपने नए कपड़े उतार दिए और मुस्कराते हुए वही कपड़े उस बच्चे को दे दिए। वह घर में केवल एक अंगवस्त्र पहने लौटा। माँ ने पूछा- "बेटा, तेरे नए कपड़े कहाँ गए?" भामाशाह ने मासूमियत से कहा, "माँ, मैंने अपने दोस्त को दे दिए। उसके पास नए कपड़े नहीं थे। वो जब उन्हें पहनकर ख़ुशी से नाचा- तो मुझे लगा, जैसे मैं ही सबसे अच्छा कपड़ा पहन रहा हूँ।" माँ की आँखों में आँसू आ गए। उन्होंने उसे सीने से लगाकर कहा- "बेटा, जिसने अपने सुख से पहले दूसरे का सुख देखा, वही सच्चा सेठ कहलाने योग्य है।"

इस घटना का अर्थ है कि उस दिन से ही गाँव के लोग उसे "दानवीर बालक भामाशाह" कहने लगे। यही बालक बड़ा होकर वही भामाशाह बना जिसने अपना सारा धन मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए महाराणा प्रताप को समर्पित कर दिया। उसने जैसे बचपन में कपड़े देकर मित्र का चेहरा खिलाया था, वैसे ही युवावस्था में धन देकर पूरे मेवाड़ का गौरव लौटा दिया।

पहला संस्कार घर में माँ से मिलता है। अगर उस दिन माँ भामाशाह को डाँट देती तो भामाशाह दानवीर भामाशाह नहीं बनते। इससे सीख मिलती है कि सच्चा दान दिल से होता है। दान का अर्थ त्याग नहीं, प्रेम है।

भामाशाह ने सिखाया कि "जो बच्चा बचपन में करुणा सीखता है, वही बड़ा होकर समाज का आधार बनता है।" आज विश्व में दानवीर का पर्यायवाची ही भामाशाह है। ❐

ऐसे थे अपने रज्जू भैया

आदर्श शिक्षक थे प्रो. राजेन्द्र सिंह उपाख्य रज्जू भैया, जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के चतुर्थ सरसंघचालक थे और भारत तिब्बत समन्वय संघ के थे आद्य प्रणेता। प्रो. राजेन्द्र सिंह जी भी राह चलते विद्यार्थी का चेहरा देख जान लेते कि उसे कुछ समस्या है। और फिर समस्या का समाधान करके ही चैन लेते। एक बार विश्वविद्यालय के बरामदे से होकर वे निकल रहे थे, तभी एक छात्र पर उनकी दृष्टि पड़ी। वे लौटकर उस छात्र के पास पहुंचे और पूछा क्या बात है? छात्र- (अचानक उन्हें अपने आगे देख सकपकाकर) जी कुछ नहीं। प्रो. राजेन्द्र सिंह जी ने आत्मीयता से कहा- मेरे साथ आओ। उनके स्वर के सम्मोहन में बंध वह छात्र उनके पीछे-पीछे चलता उनके चैम्बर में पुहंचा। रज्जू भैया ने अपनी सीट पर बैठकर छात्र को सामने कुर्सी पर बैठने को कहा, फिर उसे अत्यन्त आत्मीयता से आश्वस्त करते हुए समस्या पूछी। छात्र-सर, मैं अपने गांव से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर यहां प्रयाग विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने आया हूँ। मैंने गलती से अपने प्रवेश फॉर्म में गलत विषय भर दिया। मुझे जैसे ही अपनी गलती मालूम पड़ी, मैंने कार्यालय पहुंच सभी से अपनी भूल सुधारने के लिए अनुनय विनय की लेकिन सबने मना कर दिया। सबका कहना है कि अब कुछ नहीं हो सकता। जो विषय भर दिया वही पढ़ो। सर, मेरा तो यहां आना ही व्यर्थ हो जाएगा। कहते-कहते छात्र बहुत परेशान हो उठा। छात्र की बात सुन प्रो. राजेन्द्र सिंह सिंह जी तुरन्त उठे और छात्र को साथ लेकर कार्यालय में पहुंचे और उसकी गलती को ठीक कराया। ये छात्र थे- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी.) के पूर्व निदेशक तथा राष्ट्रीय अध्यापक प्रशिक्षण (एन.सी.टी.ई.) के पूर्व अध्यक्ष एवं जाने माने शिक्षाविद पद्मश्री प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत। प्रो. जगमोहन सिंह राजपूत कहते है कि मैं आज तक इस घटना को नहीं भूला। रज्जू भैया अपने विद्यार्थी की समस्या को बिना कहे समझ लेते और उसके समाधान के लिये डूबकर प्रयत्न करते इसलिये एक आदर्श शिक्षक के रूप में उनके विद्यार्थी आज तक उन्हें यादकर पुलकित हो उठते हैं। ❐

द्वारा राजेन्द्र मित्तल

दीपावली महोत्सव का भव्य आयोजन

गत 21 अक्तूबर को महाराजा अग्रसेन भवन इंदर एंक्लेव, निठारी नगर, जिला कंझावला में दीपावली महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आरंभ गायत्री मंत्र के साथ हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष थे समाजसेवी श्रीमान ललित वत्स जी। इस अवसर पर श्रीमान कमलापति जी, प्रांत प्रचार टोली सदस्य श्रीमान पुष्पेंद्र जी, विभाग सेवा प्रमुख श्रीमान योगराज जी, उत्तरी विभाग अध्यक्ष श्रीमान राजेंद्र जी, जिला कंझावला उपाध्यक्ष श्रीमान सुनील जी तथा महिला समिति की अध्यक्ष बहन नीता जी आदि उपस्थित रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरंभ श्री गणेश एवं माता सरस्वती वंदना द्वारा किया गया।

उत्तरी विभाग अध्यक्ष श्रीमान राजेंद्र जी ने श्रीमान ललित वत्स जी एवं जिला उपाध्यक्ष सुनील जी ने समाजसेवी राजेंद्र सिंह तोमर जी का माला पहनाकर सम्मान किया और स्मृति चिन्ह भेंट किये। कार्यक्रम में सेवा भारती केंद्रों के सेवितजनों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये जिनका सभी ने बहुत आनंद लिया। श्रीमान ललित वत्स जी ने सेवा भारती के कार्यक्रम में आमंत्रित करने पर आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में भी सहयोग करते रहने और सेवा भारती के कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए अपना फार्म हाउस निःशुल्क उपलब्ध कराने का भी आश्वासन दिया।

पुष्पेंद्र जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संक्षिप्त परिचय दिया एवं शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों में जुड़ने का आवाह्न किया। जिला उपाध्यक्ष श्रीमान सुनील जी ने वातानुकूलित स्थान उपलब्ध कराने के लिए अग्रवाल एकता मंच किराड़ी तथा कार्यक्रम में आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। इसके पश्चात निरीक्षिका, शिक्षिका तथा सेवितजनों को मिठाई एवं उपहार भेंट किए गए तथा कल्याण मंत्र एवं भोजन मंत्र के बाद सभी ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में कंझावला जिला प्रचारक श्रीमान सुधाकर जी, विभाग, जिला, जिला उप समिति (महिला समिति) एवं नगरों के कार्यकर्ता भी सम्मिलित रहे। कुल संख्या 104 की रही। ❐

मारवाड़ी युवा मंच की बहनों ने की सेवा

गत 14 अक्तूबर को मारवाड़ी युवा मंच की बहनें शाहदरा जिले में रहीं। उन्होंने बच्चों को स्वच्छता और दीपावली के विषय में बताया। 12 से 18 वर्ष की किशोरियों के लिए उन्होंने सैनिटरी पैड्स, स्टेशनरी का सामान, कपड़े, खाने-पीने का सामान समोसे, फ्रूटी, मिल्क केक, केले बांटे। शाहदरा जिले से निर्मल दीदी, पूजा जी, संगीता जी व रीना जी साथ रहीं। सेवा भारती की शाहदरा कार्यकारिणी मारवाड़ी समाज की बहनों का हार्दिक धन्यवाद करती है। ❐

शिक्षिका-निरीक्षिका सम्मान समारोह

सेवा भारती पूर्वी विभाग में हर वर्ष की तरह इस वर्ष में भी दीपावली के अवसर पर शिक्षिकाओं और निरीक्षिकाओं का सम्मान किया गया। यह कार्यक्रम जिले के अनुसार हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रान्त, विभाग के आमन्त्रित कार्यकर्ताओं व सम्मानीय विभूतियों के द्वारा लक्ष्मी गणेश जी के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन के द्वारा किया। पश्चात सभी ने सेवा भारती के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

शिक्षिका निरिक्षिका सभी ने अपने परिचय के साथ गीत-संगीत, भजन, नृत्य की प्रस्तुति दी। वर्षभर अपनी सेवाएं देने वाली शिक्षिका निरिक्षिका सेवा भारती की धुरी हैं। सेवा भारती परिवार इनको सम्मानित कर अपना आभार प्रकट करता है। पूरे मनोयोग से बहनें सेवितजनों को संस्कारित और शिक्षित करके उनके जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करती हैं। बड़े होकर इन्ही में से अधिकांश बच्चे स्वावलंबी होकर जीविकोपार्जन में सक्षम बन जाते हैं। अपने और अपने परिवार में खुशहाल लाने को तत्पर रहते हैं। सेवा भारती के उद्देश्य उनके विकास में सहायक बन जाते हैं। वे सेवा लेने के स्थान पर सेवा देने वाले बन जाते हैं। सफलता उनके कदम चूमती है। समाज में उन्हें पहचान मिल जाती है। ❒

सुल्तानपुरी में शिक्षिका प्रशिक्षण वर्ग

सेवा भारती कंझावला जिले में 11 अक्तूबर को शिक्षिका प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन गीता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सुल्तानपुरी में किया गया। प्रथम सत्र में शिक्षिकाओं के साथ चर्चा रही। द्वितीय सत्र में सह संगठन मंत्री सुनील जी भाई साहब ने सेवा भारती की अवधारणा पर शिक्षिकाओं का मार्गदर्शन किया। तृतीय सत्र में प्रकल्प के अनुसार व्यावहारिक प्रशिक्षण रहा। सिलाई की शिक्षिकाओं के प्रशिक्षण हेतु बजाज सिलाई मशीन कंपनी की ओर से उनके मुख्य तकनीशियन जगदीश जी की सेवाएं प्रदान की गई। जगदीश जी ने सिलाई मशीन के सभी घटकों के नाम और काम की जानकारी दी तथा सभी शिक्षिकाओं को केंद्र में आने वाली समस्याओं के निवारण करने का उपाय सुझाए। सौंदर्य संवर्धन की शिक्षिकाओं का गट शोभा जी बहनजी सह मंत्री महिला समिति ने लिया और उनकी समस्या निवारण एवं ज्ञान वर्धन किया। बालवाड़ी की शिक्षिकाओं का गट महिला समिति की अध्यक्ष बहन नीता सिंह तोमर जी ने लिया और उन्हें विभिन्न खेल और गतिविधियां सिखाई। अंत में कल्याण मंत्र और भोजन मंत्र के पश्चात सभी ने सामूहिक रूप से भोजन प्रसाद ग्रहण किया। कुल संख्या 49 रही। ❒

शिक्षिकाओं एवं निरीक्षिकाओं का सम्मान

सेवा भारती कमला नगर जिले द्वारा 14 अक्तूबर को शिक्षिकाओं एवं निरीक्षिकाओं को दीपावली के अवसर पर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान बी.के.गुलाटी जी रहे। आप रेल विभाग में अपर सचिव के पद पर कार्यरत रहे हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात सामाजिक कार्यों में योगदान दे रहे हैं। कमला नगर सेवा भारती जिले की 182 शिक्षिकाओं और निरीक्षिकाओं को सूट, बिस्किट के डिब्बे तथा सम्मान स्वरूप 500 रुपए की राशि भी दी गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने वाली किशोरी विकास की बेटियों को भी प्रोत्साहन के लिए सूट भेंट किए। कार्यक्रम में विभाग से श्रीमान रतन जी, श्रीमान जितेन्द्र जी, श्रीती अनीता जी, श्रीमान राकेश जी उपस्थित थे। कमला नगर जिला कार्यकारिणी की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित किया गया। ❐

शाहदरा जिले में मनाई गई वाल्मीकि जयंती

गत 7 अक्तूबर को शाहदरा जिले के सभी केंद्रों पर वाल्मीकि जयंती मनाई गई। लव कुश केंद्र में शिक्षिका नीशू ने चित्रकला में वाल्मीकि जी का चित्र बनवाया और उनकी जीवनी के विषय मे सेवित जनों को जानकारी दी। शहीद भगत सिंह केंद्र में हेमा दीदी और निर्मल दीदी द्वारा वाल्मीकि जी के बारे में बताया गया और भजन मंडली की बहनों द्वारा कार्यक्रम रखा गया।

विवेकानंद केंद्र आनंद विहार में शिक्षिका राम देवी ने वाल्मीकि समाज के एक सेवित जन के घर जाकर उनके साथ वाल्मीकि जयंती मनाई। अंबेडकर केंद्र कड़कड़डूमा में नरेश भाई साहब, रीना जी, अनिल जी उपस्थित रहे। नरेश भाई साहब और निरीक्षिका रेखा ने सेवित जनों को प्रश्नोत्तरी के माध्यम से वाल्मीकि जी के बारे में बताया। शिक्षिका मुस्कान ने चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की। जगदम्बा सेवा केन्द्र में सिलाई की छात्राओं ने महार्षि वाल्मीकि जी का चित्रण किया व रामायण पर चर्चा हुई। ❐

भीष्म सेवा केन्द्र का वार्षिकोत्सव

गत 1 अक्तूबर को यमुना विहार मंडोली नगर में माता की चौकी के सामने सेवा केन्द्र का वार्षिकोत्सव सास्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। इसकी तैयारी श्रीमती ललिता सिंह ने करायी। सास्कृतिक कार्यक्रम में गणेश जी की वंदना हुई। बच्चों ने डांडिया की प्रस्तुति के साथ ही महिषासुर संग्राम का मंचन किया। सेवा भारती भीष्म सेवा केंद्र की बालिका आद्या जादौंन ने महिषासुर मर्दिनी तथा भीष्म सेवा केन्द्र की शिक्षिका प्रीति सिंह के सुपुत्र अमय जादौंन कक्षा प्रथम ने महिषासुर का अभिनय किया। पूरी व्यवस्था केन्द्र की पालक श्रीमती भारती सिंह के द्वारा की गई। ❐

कलंदर कॉलोनी में दीपावली मंगल मिलन

सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 18 अक्तूबर को दोपहर 01 बजे से दीपावली मंगल मिलन का कार्यक्रम विधिवत दीप प्रज्ज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम में केंद्र की कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने भाग लिया तथा केंद्र में अध्ययन करने वाले लगभग 100 बच्चों ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। केंद्र में कार्यरत सभी शिक्षक शिक्षिकाओं को दिवाली के शुभ अवसर पर उपहार स्वरूप मिठाई का गिफ्ट पैक, एक डबल बेड शीट, 500 रुपये की राशि, एक पैकेट मोमबत्ती वितरित किया गया। इसके अतिरिक्त विद्युत लड़ियाँ, मोमबत्ती, दीया और जूट एवं मेकरम का थैला आदि बनाने वाले शिक्षक शिक्षिकाओं को अतिरिक्त सहायता राशि प्रदान की गई। श्री मदनलाल खन्ना जी एवं श्रीमान सलोटा जी के द्वारा बच्चों को दिवाली का महत्व बताया गया। उसके बाद कार्यकारिणी के सदस्यों को भी एक-एक मोमबत्ती का पैकेट उपहार स्वरूप दिया गया। उसके बाद केंद्र की ओर से उपस्थित सभी लोगों को मिठाई खिलाकर दीपावली की शुभकामनाएँ दी गयीं। ❐

महर्षि वाल्मीकि जी का प्रकटोत्सव

गत 07 अक्तूबर को सेवा भारती के स्वास्थ्य केंद्र, डी ब्लाक अशोक नगर, जिला रोहतास में महर्षि वाल्मीकि का प्रकटोत्सव मनाया गया। मरीजों व समाज के बंधुओं ने महर्षि वाल्मीक जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष श्रीमान राम प्रकाश गोस्वामी, उपाध्यक्ष श्रीमान सुभाष जी व विभाग मंत्री तथा आपदा टोली सदस्य श्रीमान गोविन्द जी उपस्थित रहे। ❐

कला प्रतियोगिता में सेवा भारती के बच्चों का शानदार प्रदर्शन

हुड़को द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाली कला प्रतियोगिता इस वर्ष 20 सितंबर, 2025 को इंडिया हेबीटेट सेंटर, लोधी रोड, दिल्ली में आयोजित की गयी। इस कला प्रतियोगिता में हर वर्ष दिल्ली और इसके आसपास के क्षेत्र में कार्य करने वाली कई स्वयंसेवी संस्थाएं भाग लेती हैं। इसी प्रतियोगिता में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन के 10 बच्चों ने भाग लिया था। इस वर्ष सेवा भारती के अतिरिक्त दिल्ली एन सी आर की कुल 20 स्वयंसेवी संस्थाओं ने भाग लिया।

केंद्र के बच्चों का प्रदर्शन हर वर्ष की भांति इस वर्ष में अच्छा रहा। केंद्र की कोचिंग कक्षा में पढ़ने वाली कुमारी शीतल ने प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। गत 08 अक्तूबर 2025 को दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाले सभी बच्चों को माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री (आवास एवं शहरी विकास

मंत्रालय) श्री तोखन साहू के द्वारा पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार के रूप में कुमारी शीतल को 5000/- (पाँच हज़ार रुपए), एक प्रशस्ति पत्र तथा अन्य कई पुरस्कार प्राप्त हुए। ❐

कंतारा का विशेष प्रदर्शन

दीपावली एवं भाईदूज के शुभ अवसर पर ट्रांसजेंडर समाज के सदस्यों के लिए डिलाइट सिनेमा में "कंतारा" फिल्म का विशेष प्रदर्शन आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कुल 28 प्रतिभागी शामिल रहे। यह पहल सभी के साथ समान आनंद और उत्सव की भावना साझा करने की दिशा में एक सुंदर प्रयास रहा। ❐

सीआर पार्क में भाई फोटा कार्यक्रम

प्रवासी बंगाली समाज द्वारा 23 अक्टूबर 2025 को दिल्ली के सीआर पार्क में भाई फोटा या भाई दूज मनाया गया। इस दिन बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक, आरती और मिठाई लगाकर भाई-बहन के पवित्र बंधन का उत्सव मनाती हैं। भाई फोटा कार्यक्रम पश्चिम बंगाल से आने वाले छात्रों (सेवा भारती द्वारा संचालित छात्रावास 'सेवाधाम' के छात्रों एवं किशोरी विकास प्रकल्प की छात्राओं) के समक्ष भाईचारे और आत्मीयता के बंधन को मजबूत करने के लिए आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद के श्री सुबोध जी भाईसाहब (प्रांत संगठन मंत्री, विश्व हिंदू परिषद), श्री दीपक भट्टाचार्य, श्री अमरीश जी, श्री स्वरूप कुमार, श्री इंद्रनील चटर्जी, प्रांत कार्यकारिणी सदस्य, सेवा भारती-दिल्ली, श्री विनोद श्रीवास्तव जी (विभाग मंत्री, सेवा भारती, दक्षिणी दिल्ली), अरुण मुखर्जी, अंजलि दीदी एवं प्रवासी बंगाली समाज के सभी- गणमान्य व्यक्ति और सदस्य सहित समाज की प्रमुख हस्तियों ने भाग लिया। ❐

सेवा भारती-प्रान्त कार्यालय में दीपावली मंगल मिलन

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी शुभ दीपावली मंगल मिलन 18 अक्टूबर धनतेरस के दिन सेवा भारती प्रान्त कार्यालय, गोल मार्किट में प्रात: 9.00 बजे हवन-यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सेवा भारती दिल्ली की विस्तृत कार्यकारिणी एवं कार्यालय में कार्यरत कार्यकर्ता उपस्थित थे। सभी ने एक-दूसरे को दीपावली की शुभकामनाएं दीं और प्रांत अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल का उदबोधन हुआ। उन्होंने कहा कि चलो जलायें दीप वहां, जहां अभी भी अंधेरा है। दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से बहुत महत्व है। सामाजिक दृष्टि से इस पर्व का महत्व इसलिए है कि दीपावली आने के पूर्व ही घर द्वार की स्वच्छता पर ध्यान दिया जाने लगता है। टूट-फूट सुधरवाकर घर की दीवारों पर सफेदी तथा दरवाजों पर रंग-रोगन किया जाता है। जिससे दीवारों की न केवल आयु बढ़ जाती है अपितु आकर्षण भी बढ़ जाता है। स्वच्छ और सुंदर वातावरण शरीर और आत्मा को नव चेतना व स्फूर्ति प्रदान करता है। दीपावली के दिन अमिर-गरीब सभी के घर प्रकाश फैलता है। सभी लोग इस महोत्सव पर अपनी-अपनी क्षमता के अनुरूप लक्ष्मी मां की अगवानी करते हैं। दीपावली जागरूकता और कर्मठता का संदेश देती है। कार्यक्रम के अंत में सभी ने भोजन का आनन्द लिया। ❐

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

चांदनी चौक में रक्तदान शिविर

दीनदयाल लोक कल्याण फाउंडेशन (2015 में स्थापित) ने 12 अक्तूबर को ओमेक्स चौक, चांदनी चौक, दिल्ली में रक्तदान शिविर- "रक्तदान, महादान, जीवनदान" का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इस आयोजन का उद्देश्य स्वैच्छिक रक्तदान के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाना और नागरिकों को जीवन बचाने के इस नेक कार्य में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना था। यह शिविर रोटरी क्लब ब्लड बैंक, आधिकारिक रक्त संग्रह और चिकित्सा भागीदार के सहयोग से आयोजित किया गया था, जिससे विशेषज्ञों की देखरेख में सुचारू और सुरक्षित रक्तदान प्रक्रिया सुनिश्चित हुई। इस पहल को एच.एस ग्रुप के साथ-साथ एच.एस विमेन एथनिक वियर, सूर्या, सियोनी, रागवास और श्रीका द्वारा प्रायोजित किया गया था। इस आयोजन को जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली और 100 से अधिक स्वैच्छिक रक्तदाता मानवता के लिए योगदान देने के लिए आगे आए।

इस अवसर पर एच.एस ग्रुप के मालिक श्री नीरज गुप्ता और श्री दीपक गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे, जबकि सेकॉम एंड एसजे सिक्योरिटी सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड के मालिक डॉ. संजय जिंदल विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। दीनदयाल लोक कल्याण फाउंडेशन के संस्थापक श्री राहुल

शर्मा और सह-संस्थापक सुश्री मानसी आहूजा ने सभी दानदाताओं, प्रायोजकों और चिकित्सा सहयोगियों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। एचएस ग्रुप के मालिक श्री दीपक गुप्ता ने कहा कि सच्ची सामाजिक ज़िम्मेदारी दूसरों के कल्याण में योगदान देने में निहित है। रक्तदान जीवन बचाने का सबसे सरल और सबसे शक्तिशाली तरीका है। एच.एस ग्रुप में हमें ऐसे मानवीय प्रयासों का समर्थन करने पर गर्व है जो हमारे समुदाय को मज़बूत बनाते हैं। सेकॉम एंड एसजे सिक्योरिटी सिस्टम्स प्राइवेट लिमिटेड के मालिक डॉ. संजय जिंदल ने कहा कि आज 100 से ज़्यादा दानदाताओं द्वारा दिखाया गया समर्पण और करुणा वास्तव में सराहनीय है। इस तरह की पहल सामूहिक मानवता की ताकत को दर्शाती है और हमें समाज के प्रति हमारी साझा ज़िम्मेदारी की याद दिलाती है। ❐

समाज सेवा को समर्पित गुप्ता परिवार

समाज सेवा या दान की परम्परा कहते ही हमारी आँखों के सामने अनेक महापुरुषों के नाम आ जाते हैं, जैसे कि महर्षि दधीचि, दानवीर कर्ण, दानवीर भामाशाह। भामाशाह ने तो सैन्य संचालन हेतु महाराणा प्रताप को अपना सारा धन समर्पित कर दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि दान की पुण्य परम्परा हमारे समाज में पौराणिक काल से है। दान अर्थात् समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना। अपने समाज में दानदाताओं की कथाओं में राजा-महाराजाओं से लेकर निर्धन से निर्धन परिवारों तक के कई प्रसंग मिल जाते हैं।

इन्हीं परम्पराओं को चरितार्थ करते हुए मैसर्स सूर्या साड़ी के संचालक श्री नीरज गुप्ता जी समाज सेवा के पथिक बनकर अनेक सामाजिक कार्य में सहयोग करते हैं। चाहे कोई संस्थान हो अन्य तरह से अपनी क्षमता अनुसार उनकी कोशिश यही रहती है कि भारत भू एक स्वस्थ, समृद्ध एवं वैभवशाली राष्ट्र बने। जहां दीन-हीन अबला को हर एक सहयोग करने को तैयार रहे। सभी सुखी और निरोगी हों। सेवा को समर्पित श्री नीरज गुप्ता जी-सेवा भारती दिल्ली द्वारा आयोजित विविध कार्यों में भी समय-समय पर सहयोग करते रहते हैं। विशेषतौर पर वसंत पंचमी पर आयोजित सामूहिक विवाह समारोह के लिए सूर्या साड़ी की ओर से कीमती एवं बहुत ही सुन्दर लहंगा, चुन्नी निःशुल्क सभी कन्याओं के लिए प्रदान करते हैं। सेवा के लिए समर्पित श्री गुप्ता जी को यह सब अपने पारीवारिक संस्कार की देन है। ❐

द्वारा डॉ. संजय जिंदल

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 नवम्बर, 2025, प्रकाशन तिथि-6-7 नवम्बर, 2025
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27

गोपालधाम के बच्चों ने प्रस्तुत किए रंगारंग कार्यक्रम

गत 16 अक्तूबर को गोपालधाम के बच्चों के लिए दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, द्वारका द्वारा "जाय ऑफ गिविंग" रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में गोपालधाम और कालेज के बच्चों ने अच्छे नृत्य व गान का प्रदर्शन किया। बच्चों को कालेज की तरफ से उपहार भी दिये गये। सेवा भारती की तरफ से श्री मुकेश गोयल जी, श्री मनोज शर्मा जी, श्री धीरेन्द्र गुप्ता जी, श्रीमती जयति अग्रवाल जी, श्री ओम सेठी जी, श्रीमती रेखा सिंह, श्री पंकज कुमार और श्री अखिलेश कुमार बच्चों के साथ शामिल हुए और कालेज की तरफ से प्राचार्य श्रीमान हेमचंद जैन, कॉमर्स विभाग की अध्यक्ष श्रीमती रेनू अग्रवाल, अन्य प्रोफेसर गण एवं कालेज के विद्यार्थी शामिल हुए। ❐

गोविन्दपुरी में मानधन-सेवी सम्मान समारोह

गत 10 अक्तूबर को सेवा भारती-दक्षिणी विभाग द्वारा दीपावली पूजन और निरीक्षिका, शिक्षिका एवं मानधन सेवी सम्मान कार्यक्रम आर्य समाज मन्दिर, गोविन्दपुरी, कालकाजी में संपन्न हुआ। दीप प्रज्ज्वलन के साथ ही दीपावली पूजन और आरती की गई। आज का कार्यक्रम निरीक्षिका, शिक्षिका और सभी मानधन सेवियों का रहा। सभी को अपने मन की बात रखने का अवसर दिया गया और सबने अपने-अपने अनुभव बताए। दीपावली पर्व के अवसर पर उपहार स्वरूप सभी मानधन सेवियों को एक साड़ी/सलवार कुर्ता, प्रेशर कूकर और एक किलोग्राम मिठाई दी गई। गोविंदपुरी निवासी व्यवसायी एवं समाजसेवी श्री मनोज गर्ग जी द्वारा विभाग की सभी किशोरी विकास की कक्षाओं की किशोरियों और बाल संस्कार के बच्चों के लिए भी कपड़े उपलब्ध करवाए गए। मनोज गर्ग जी ने बच्चों को सम्बोधित भी किया। विभाग संगठन मंत्री श्री पन्नालाल जी ने भी अपनी बात रखी। विभाग मंत्री विनोद जी ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी और मानधन सेवियों द्वारा किए गए प्रश्नों का समाधान भी किया गया। विभाग अध्यक्ष डॉ. अनंगपाल जी ने धनतेरस, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भाई दूज का विषय रखा तथा आर्य समाज मन्दिर समिति, श्री मनोज गर्ग जी और अन्य सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। विभाग से श्रीमती अंजली जी, आचार्य प्रेमलता जी, श्री रविन्द्र जी और तीनों जिलों से श्री दिनेश जी, श्रीमती स्मिता जी, श्रीमती राजेश जी, श्री देव प्रकाश जी और अन्य गणमान्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे। विभाग सहमंत्री श्रीमती आशा चौबे जी ने शानदार मंच संचालन किया। जलपान के साथ ही कार्यक्रम संपन्न हुआ। ❐

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।